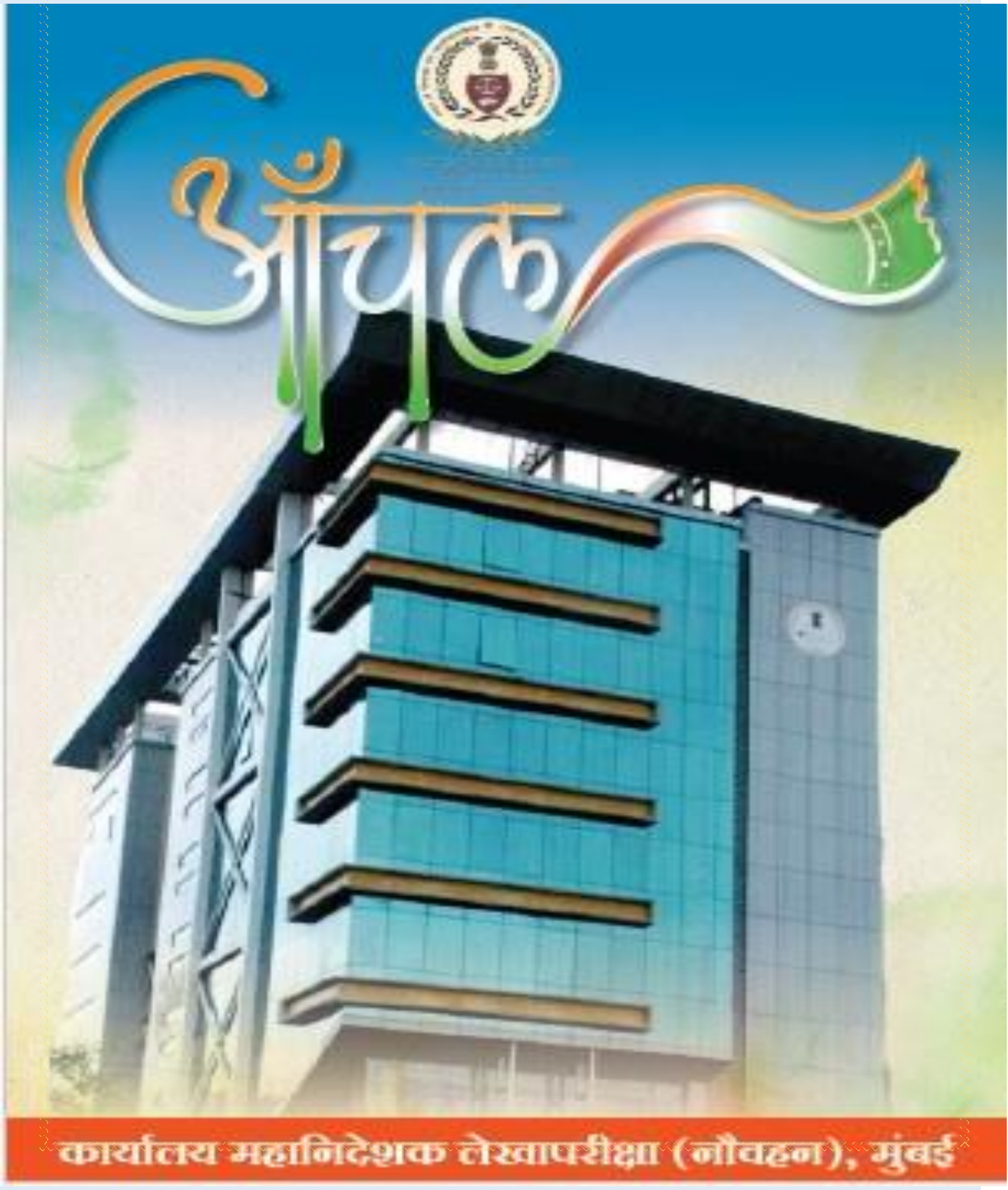
आँचल
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

आँचल

(20वाँ अंक)

(कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका)

आँचल परिवार

संरक्षक

श्री गुलजारी लाल
महानिदेशक

दिग्दर्शन

सुश्री अनिता सिंह
निदेशक (प्रतिवेदन)

प्रबंध संपादक

श्री ज्योतिमय बाइलुंग
निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय परामर्श

श्री पियूष रामटेके, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
सुश्री शिवानी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

संपादक

श्री जय राम सिंह, क. अनुवादक
सुश्री पूजा चौधरी, क. अनुवादक

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) - कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है । इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं और यह आवश्यक नहीं कि कार्यालय उन विचारों से सहमत हो।

संरक्षक की कलम से

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई अपनी विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आँचल" का नियमित प्रकाशन कर रहा है जो हर्ष की बात है । कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों में हिंदी में लेखन के प्रति उत्साह बढ़ाने में इस पत्रिका की भूमिका सुखद अनुभूति देती है।

यह पत्रिका न सिर्फ रचनाधर्मिता को बढ़ावा दे रही है, बल्कि उसमें निरंतर गुणात्मक सुधार के भी प्रयास कर रही है । पत्रिका में आम पाठकों की अभिरुचि के विषय जैसे पर्यटन, खानपान, सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ-साथ देश की मुख्यधारा में चल रहे विमर्शों को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है ।

मैं संपादक-मंडल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप देने में अपना अमूल्य योगदान दिया है । मेरी कामना है कि यह पत्रिका इसी सहजता एवं सरलता से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका निभाती रहे एवं निरंतर प्रगति करती रहे ।

गुलजारी लाल
महानिदेशक

दिग्दर्शन

इस कार्यालय की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" का 20वाँ अंक पाठकों के बीच देखकर अच्छा लग रहा है । काम के भारी दवाब के बावजूद कार्यालय के कार्मिकों ने इस पत्रिका के लिए सामग्री लिखने में जो उत्साह दिखाया है, वह प्रशंसनीय है । भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अधिकारियों / कर्मचारियों में लेखन एक आवश्यक तत्व है जिसको परिवर्धित करने में यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

मैं आशा करती हूँ कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में नवीन उत्साह का संचार करेगी । पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई ।

अनिता सिंह
निदेशक (प्रतिवेदन)

संदेश

कार्यालय के कार्मिकों में हिंदी में रचनात्मक अभिरुचि जगाने में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है । इसी कड़ी में कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल सिद्ध हुई है ।

यह पत्रिका कार्मिकों को विभिन्न विषयों पर अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए एक सार्थक एवं सारस्वत मंच प्रदान करती है । मुझे आशा ही नहीं, वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति-पथ पर अग्रसर रहते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति अपने उत्तरदायित्व को कुशलतापूर्वक निभाने में समर्थ सिद्ध होगी ।

आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी भविष्य में भी इस पत्रिका को उत्कृष्ट और ज्ञानवर्द्धक बनाने के प्रति अपना उत्साह और सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे ।

ज्योतिमय बाइलुंग
निदेशक (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

संरक्षक की कलम से		4	
दिग्दर्शन		5	
संदेश		6	
संपादकीय		7	
क्रम संख्या	**रचना का शीर्षक**	**रचनाकार**	**पृष्ठ संख्या**
1	स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि		10
2	जो लौट के घर न आए		15
3	आइना	श्रीमती वीणा शिरशाट	19
4	आसमान में चाँद नहीं है	श्री अजीत कुमार	20
5	एक दो तीन चार....	श्री विनायक बोकड़े	21
6	बचपन से बुढ़ापे की राह पर	श्रीमती नयना केळसकर	22
7	A WARRIOR IN ME	सुश्री कीर्ति राज	23
8	पापा की परी	सुश्री कीर्ति राज	24
9	LIBERTY TO DREAM	श्री रॉबर्ट सिम्टे	25
10	अरुणाचल प्रदेश के अनछुए सौंदर्य की खोज: एक व्यक्तिगत यात्रा	श्री ज्योतिमय बाइलुंग	26
11	मेरी उदयपुर की एकल यात्रा	सुश्री शिवानी	27
12	बेटे के नाम पत्र	श्री भरत लाल मीणा	32
13	माथेरन : मुंबई का हिल स्टेशन	श्री प्रवीण नाफड़े	33
14	भोजन जीवन है, इसका आनंद लें	श्रीमती नयना केळसकर	36
15	आँचल	श्री अजीत कुमार	39
16	मेरी पहली परीक्षा	श्री सुनील कुमार यादव	41
17	मुंबइया हिंदी	श्री जय राम सिंह	43
18	आपके पत्रः आपकी प्रतिक्रियाएँ		47
19	चित्र बोलते हैं		55
20	नियुक्तियाँ/पदोन्नतियाँ/स्थानांतरण/सेवानिवृत्ति		62

हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ

जय राम सिंह
क. अनुवादक

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है और आमतौर पर इस दिन ही हिंदी भाषा की महत्ता, इसकी पहुंच, इसके सम्मान आदि को लेकर बात होती है। कोई दो राय नहीं कि हिंदी की लोकप्रियता दुनियाभर में बढ़ी है और इसके क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं । यानी अब हिंदी केवल राजभाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक बाजार में भी अपनी जगह बना रही है। आइए जानते हैं हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ हो तो कहां-कहां आपको मौका मिल सकता है और आप अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं।

हिंदी अधिकारी - भारत सरकार और अधिकांश राज्य सरकारों के विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, सरकारी संस्थाएँ तथा विभिन्न बैंक राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति करते हैं। हिंदी भाषा अधिनियम का प्रावधान है कि सभी संस्थानों में हिंदी अधिकारी की नियुक्ति होगी । भारत सरकार व निजी संस्थानों में हिंदी अधिकारी के रूप में काम करने का अवसर मिल सकता है । देश-विदेश के सरकारी संस्थानों में हिंदी सलाहकार के रूप में भी नियुक्ति हो सकती है।

अनुवादक व द्विभाषिया - प्रिंट मीडिया सहित कई सरकारी विभागों में अनुवादक व हिंदी लेखक के रूप में अवसर उपलब्ध हैं । कई संस्थान अनुवादकों को कॉन्ट्रैक्ट आधार पर रोजगार देते हैं। अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में अपना लेख लिखने वाले जानेमाने अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के लेख का अनुवाद हिंदी में किया जाता है। हिंदी/अंग्रेजी में फिल्मों, विज्ञापनों की लिपियों का अनुवाद भी ऐसा ही काम है। इसी तरह द्विभाषी दक्षता के साथ कोई भी स्वतंत्र (फ्रीलान्स) अनुवादक के रूप में काम कर सकता है और अपनी अनुवाद (ट्रांसलेशन) कंपनी भी खोल सकता है।

मीडिया - टीवी और रेडियो चैनल्स और पत्रिकाओं/समाचार पत्रों के हिंदी संस्करणों में हुई बढ़ोतरी के कारण इन क्षेत्रों में भी नौकरियों के अवसर कई गुना बढ़े हैं। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादकों, पत्रकारों, संवाददाताओं, उप संपादक, प्रूफ रीडर, रेडियो जॉकी, एंकर आदि की आवश्यकता होती है। इन लोगों का अधिकांश कार्य हिंदी में होता है। हिंदी में शैक्षणिक योग्यता रखने के साथ-साथ पत्रकारिता/जनसंचार में डिग्री/डिप्लोमा की योग्यता के साथ एक से अधिक स्थानों पर नौकरी का अवसर पा सकते हैं।

फ्रीलांसिंग व स्क्रिप्ट राइटिंग - फिल्मों, धारावाहिकों और विज्ञापन कंपनियों में स्क्रिप्ट राइटर्स की मांग कम नहीं है। प्रिंट मीडिया में भी क्रिएटिव व तकनीकी लेखकों की जरूरत बनी रहती है । इसके अलावा वैश्विक लेखन की तर्ज पर हिंदी में भी उपन्यास-लेखन, कहानी/कविता/नाटक लेखन जैसे मौलिक लेखनों की संभावनाएँ उपलब्ध हैं ।

अध्यापन - अध्यापन का पेशा सदाबहार पेशा है । इसे सबसे प्रतिष्ठित पेशा भी कहा जाता है । देश के प्रमुख स्कूल-कॉलेजों में नर्सरी से लेकर परा-स्नातक (पीजी) स्तर तक अध्यापन के अवसर हैं, जबकि विदेशी संस्थानों में भी हिंदी अध्यापकों की नियुक्ति खूब हो रही है । हिंदी से बीए व बीएड करने के बाद स्कूलों में हिंदी अध्यापक की नौकरी मिल जाती है । कॉलेज के स्तर पर अध्यापन करने वाले छात्रों को एमए के बाद एमफिल और पीएचडी करने के बाद कॉलेज में प्रवक्ता का पद मिल सकता है। पीएचडी धारक व्यक्ति कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर देश में कहीं भी व्याख्याता (लेक्चरर) की नौकरी पा सकते हैं। अध्यापन के लंबे अनुभव पर वे रीडर व प्रोफेसर भी बन सकते हैं।

इंटरनेट - आज हिंदी की कई वेबसाइट उपलब्ध हैं। विभिन्न हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के पोर्टल एवं ब्लॉग भी इंटरनेट पर हैं। ऐसे में पोर्टल पर भी जॉब के अवसर उपलब्ध होने लगे हैं।

कॉल सेंटर - घरेलू कॉल सेंटरों (डोमेस्टिक कॉल सेटर्स) में हिंदी के आधार पर भी बहुत सारी नौकरियाँ मिलने लगी हैं। दूर-संचार (टेली-कम्युनिकेशन) में भी हिंदी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है।

सॉफ्टवेयर- हिंदी सॉफ्टवेयर्स की जरुरत के मद्देनजर अब हिंदी भाषी छात्रों को भी इस क्षेत्र में अच्छे अवसर मिल रहे हैं। कम्प्यूटरों/मोबाइल फोनों में यूनिकोड की उपलब्धता ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को तेज गति दी है । भारत के बढ़ते उपभोक्ता बाज़ार के कारण विश्व की सभी प्रमुख आईटी कंपनियाँ अपनी-अपनी कंपनियों के व्यवसाय में हिंदी के प्रचुर अवसर को देखते हुए हिंदी सामग्रियों का उपयोग कर रही हैं । इस कारण हिंदी के स्नातकों/परास्नातकों को अब आईटी कंपनियों में भी अच्छी नौकरियाँ मिलने लगी हैं । वह दिन दूर नहीं जब सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग भी हिंदी भाषा में होने लगे ।

प्रतियोगी परीक्षा- हिंदी से स्नातक करने के बाद कई प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होकर बैंक, न्यायिक सेवा, सिविल सर्विस और स्टेट सर्विस के अलावा रेलवे व बैंक आदि में भी नौकरी के बेहतर अवसर हो सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ भी अपने क्रिया-कलापों को अब हिंदी में उपलब्ध कराने लगा है । इसके कारण हिंदी की उपादेयता वैश्विक स्तर पर कई गुणा बढ़ गई है । इस तरह हम देखते हैं कि हिंदी अब सिर्फ राजभाषा के रूप में राज-काज की ही भाषा नहीं है, बल्कि हिंदी अपने विश्वव्यापी पहुँच के कारण अब विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के भी अच्छे अवसर उपलब्ध करा रही है ।

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हमारे देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है । हिंदी दिवस हम सबों को राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी संवैधानिक और नैतिक जिम्मेवारियों की याद दिलाता है । इस दिन हम सभी हिंदी के प्रति स्वयं को निष्ठापूर्वक समर्पित करते हैं और अपने-आप को वचन देते हैं कि अपने जीवन में और विशेषकर अपने-अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिंदी में करेंगे।

स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि

(हमारी गृह पत्रिका "आँचल" का यह नियमित स्तम्भ है । इस अंक में हम देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं । आज हम सभी आजाद देश के नागरिक हैं क्योंकि बीते हुए कल में इन असंख्य वीर सेनानियों ने हमारे 'आज' को सुखमय बनाने के लिए अपने 'आज' की आहुति दे दी थी । इस स्तंभ में हम स्वतंत्रता के वैसे नायकों व नायिकाओं की गाथाएँ सामने लाने का प्रयास करते हैं जिनकी अधिक चर्चा नहीं होती - संपादक)

रामवृक्ष बेनीपुरी (23 दिसंबर 1899 - 9 सितंबर 1968)

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी एक स्वतंत्रता सेनानी, समाजवादी नेता, संपादक और हिंदी लेखक थे। उनका जन्म भारतीय राज्य बिहार में एक भूमिहार परिवार में मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। उन्होंने भारत की आजादी के लिए लड़ने के लिए नौ साल जेल में बिताए थे । वह 1931 में बिहार सोशलिस्ट पार्टी और 1934 में काँग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक थे । उन्होंने 1937 के भारतीय प्रांतीय चुनावों के दौरान 1935 से 1937 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पटना जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया ।

उन्हें 1957 में कटरा उत्तर से विधान सभा (भारत) के सदस्य के रूप में चुना गया था । 1958 में उन्हें बिहार विश्वविद्यालय (अब बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय), मुजफ्फरपुर के सिंडिकेट सदस्य के रूप में चुना गया था ।

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जयप्रकाश नारायण के करीबी सहयोगी और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के एक प्रमुख प्रकाश-स्तंभ थे । उन्होंने रॉलेट एक्ट के खिलाफ आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और 1920 में महात्मा गाँधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में भाग लिया। वह बिहार प्रदेश काँग्रेस कमेटी के सक्रिय सदस्य, भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के सदस्य, बिहार सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक और अखिल भारतीय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की कार्य समिति के सदस्य थे । वह बिहार प्रांतीय किसान सभा के अध्यक्ष और अखिल भारतीय किसान सभा के उपाध्यक्ष भी रहे थे । 1937 में फैजपुर में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के 50 वें सत्र में उन्होंने जमींदारी के उन्मूलन पर एक प्रस्ताव रखा । यह बेनीपुरी ही थे जिन्होंने जयप्रकाश नारायण को हजारीबाग सेंट्रल जेल से भागने में मदद की । जेल से 9 नवंबर 1942 को भागने की योजना बनाई गई थी । योगेंद्र शुक्ल और बेनीपुरी जयप्रकाश नारायण के साथ थे तो दूसरी ओर सूरज नारायण सिंह, गुलाली सुनार, पंडित रामनंदन मिश्रा और शालिग्राम सिंह ने जेल के अन्य कैदियों को गाने-बजाने में व्यस्त रखा था । श्री रामवृक्ष बेनीपुरी

समाज में समता के पुरजोर समर्थक थे । अकारण ही, सिर्फ जन्म के आधार पर वे ब्राह्मणों की उत्कृष्टता को मानने को तैयार नहीं थे । हजारीबाग सेंट्रल जेल में उन्होंने जातिवाद के खिलाफ "जनेऊ तोड़ो अभियान" (उपनयन धागों को तोड़ना) अभियान शुरु किया ।

स्वतंत्रता-सेनानी होने के साथ-साथ श्री रामवृक्ष बेनीपुरी उच्च कोटि के साहित्यकार थे । उनकी साहित्यिक रचनाएँ सीधे पाठकों के हृदय तक पहुँच जाती थीं । उनकी साहित्यिक प्रतिभा देखकर उस समय के विद्वान लोग उन्हें 'कलम का जादूगर' कहते थे ।

अमर शहीद स्वतंत्रता-सेनानी **श्री रामवृक्ष बेनीपुरी** अमर रहें, अमर रहें।

(आँचल परिवार देशप्रेम, त्याग, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति और अप्रतिम साहित्यकार अमर स्वतंत्रता-सेनानी श्री रामवृक्ष बेनीपुरी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

बसावन सिंह (23 मार्च 1909 - 7 अप्रैल 1989)

बसावन सिंह, जिन्हें बसावन सिन्हा के नाम से भी जाना जाता है, एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता और वंचितों, औद्योगिक मजदूरों और कृषि श्रमिकों के अधिकारों के लिए एक प्रचारक थे । उन्होंने स्वतंत्रता के लिए उनके समर्थन के परिणामस्वरूप ब्रिटिश भारत में जेलों में कुल साढ़े 18 साल बिताए और वे लोकतांत्रिक समाजवाद के लिए प्रतिबद्ध थे । योगेंद्र शुक्ल के साथ, वह बिहार में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य थे । अपने क्रांतिकारी सहयोगियों और दोस्तों के बीच उन्हें बहुत लंबा होने के कारण लम्बू कहा जाता था।

1929 में लाहौर षड़यंत्र केस के बाद सिंह फरार हो गए। वह भुसावल, काकोरी, तिरहुत और देलुआहा साजिश मामलों में सह-आरोपी थे। उन्होंने चंद्रशेखर आजाद और केशव चक्रवर्ती के साथ आंदोलन को आगे बढ़ाया । उन्हें सात साल जेल की सजा सुनाई गई थी, लेकिन तीन दिनों के बाद ही जून 1930 में बाँकीपुर सेंट्रल जेल से भाग निकले । उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और भागलपुर सेंट्रल जेल भेज दिया गया ।

भागलपुर में रहते हुए श्री सिंह ने जेल की अमानवीय परिस्थितियों के विरोध में आमरण अनशन किया । अनशन के 12वें दिन उन्हें गया सेंट्रल जेल ले जाया गया और एकांत कारावास में रखा गया । जल्द ही उन्हें जेल के अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया । जब उनके भूख हड़ताल को तुड़वाने की सारी कोशिशें बेकार हो गईं तब बिहार के तत्कालीन मंत्री गणेश दत्त ने श्री सिंह की मां श्रीमती दौलत कुँवर से आग्रह किया कि वह उन्हें भूख हड़ताल छोड़ने का आग्रह करें । उनकी माँ उपवास के 50वें दिन वहाँ गईं और अनशन तुड़वाने की जगह उन्होंने बसावन सिंह को अनशन की सफलता का

आशीर्वाद दिया । अनशन के कारण बसावन बाबू के देहांत की आशंका में उनके चाहनेवाले लोग श्री सिंह के मृत शरीर को प्राप्त करने के लिए जेल के गेट पर रोजाना इंतजार करते थे । जेल में सभी राजनीतिक कैदी भी उनके साथ एकजुटता दिखाने के लिए पिछले कुछ दिनों से अनशन पर थे, लेकिन 58वें दिन गाँधी द्वारा यह बताए जाने पर कि उनकी मांगें मान ली गई हैं, उन्होंने अपना अनशन तोड़ दिया । जून 1936 में उनके खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया था, लेकिन उनके आंदोलन को प्रतिबंधित करने के लिए तमाम पाबंदियाँ भी लगा दी गईं । उन्होंने प्रतिबंधों का उल्लंघन किया और उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया ।

अमर शहीद स्वतंत्रता-सेनानी **श्री बसावन सिंह** अमर रहें, अमर रहें।

(आँचल परिवार देशप्रेम, त्याग, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी श्री बसावन सिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

भवानी प्रसाद भट्टाचार्य (10 जून 1914 - 3 फरवरी 1935)

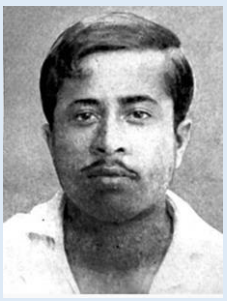

भवानी प्रसाद भट्टाचार्य का जन्म 1914 में ढाका के जॉयदेवपुर में हुआ था। उनके पिता का नाम बसंत कुमार भट्टाचार्य और माता का नाम दमयंती देवी था। वह कम उम्र में ब्रिटिश भारत के एक क्रांतिकारी संगठन बंगाल स्वयंसेवक-दल में शामिल हो गए। भवानी प्रसाद भट्टाचार्य एक भारतीय क्रांतिकारी और बंगाल स्वयंसेवक-दल के सदस्य थे जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के प्रयास में ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों के खिलाफ हत्याएं कीं।

भवानी प्रसाद भट्टाचार्य ने गवर्नर जॉन एंडरसन की हत्या करने के लिए उज्ज्वला मजुमदार, सुकुमार घोष, रवि बनर्जी और कुछ अन्य क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं के साथ दार्जिलिंग की यात्रा की । उन्होंने अपने हथियार उज्ज्वला मजुमदार के पास रखे हारमोनियम में छिपा दिया था। उज्ज्वला ने एक होटल में मनोरंजन बनर्जी के साथ एक विवाहित जोड़े के रूप में प्रवेश किया । 6 मई, 1934 को, भवानी प्रसाद भट्टाचार्य ने दार्जिलिंग लेबोंग रेसकोर्स में गवर्नर को गोली मार दी । लेकिन उसे केवल मामूली चोटें आईं । भवानी को पकड़ लिया गया । उज्ज्वला मजुमदार और मनोरंजन बनर्जी भेष बदलकर कलकत्ता भाग गए और सोवरणी दत्त के घर में शरण ली । पुलिस ने उन्हें भी 18 मई, 1934 को गिरफ्तार कर लिया । सुकुमार घोष और उज्ज्वला मजुमदार को 14 साल की जेल की सजा और भवानी प्रसाद को मौत की सजा सुनाई गई । भवानी प्रसाद को 3 फरवरी, 1935 को राजशाही सेंट्रल जेल में फाँसी दी गई थी । आजादी के बाद समाज के कई वर्गों ने कलकत्ते के एंडरसन हाउस का नाम बदलने की मांग उठाई । इसे ध्यान में रखते हुए 1989 में सरकार ने एंडरसन हाउस का नाम

बदलकर भवानी भवन कर दिया गया । अब यह पश्चिम बंगाल सरकार की राज्य पुलिस का मुख्यालय है ।

अमर शहीद स्वतंत्रता-सेनानी **श्री भवानी प्रसाद भट्टाचार्य** अमर रहें, अमर रहें।

(आँचल परिवार देशप्रेम, त्याग, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर शहीद श्री भवानी प्रसाद भट्टाचार्य को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

ज्योतिर्मयी गंगोपाध्याय (1889-1945)

ज्योतिर्मयी गंगोपाध्याय (1889-1945) एक बंगाली शिक्षाविद, नारीवादी और ब्रह्म समाज की सदस्य थीं । ज्योतिर्मयी का जन्म 25 जनवरी 1889 को कोलकाता, बंगाल प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश राज में हुआ था। उनके पिता द्वारकानाथ गांगुली एक समाज सुधारक, ब्रह्म समाज के नेता और एक भारतीय राष्ट्रवादी थे और उनकी मां कादम्बिनी देवी कोलकाता विश्वविद्यालय से चिकित्सा क्षेत्र में स्नातक होने वाली पहली महिला छात्रा थीं ।

ज्योतिर्मयी ने ब्रह्मो बालिका शिक्षालय (ब्रह्मो गर्ल्स स्कूल) से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और कोलकाता के बेथ्यून कॉलेज में बीए पूरा किया। 1908 में उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की । उन्होंने बेथ्यून कॉलेजिएट स्कूल में और उसके बाद कटक, ओडिशा के रावेनशॉ कॉलेज में पढ़ाया । बाद में वह महिला कॉलेज में प्रिंसिपल के रूप में श्रीलंका चली गईं । 1920 में उन्होंने जालंधर कन्या महाविद्यालय के प्रिंसिपल के रूप में कार्य किया । 1925 में उन्होंने ब्रह्म गर्ल्स स्कूल के प्रिंसिपल के रूप में कार्य किया और अगले वर्ष विद्यासागर बानी भवन में। वह 1929 में बौद्ध कॉलेज, सीलोन में शामिल हुईं । वह 1920 के दशक की शुरुआत में असहयोग आंदोलन में शामिल हुईं । ज्योतिर्मयी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए एक महिला स्वयंसेवक कोर की स्थापना की । 1926 में उन्होंने स्टूडेंट्स एसोसिएशन फॉर सोशल सर्विस की शुरुआत की । वह बंगाल प्रांतीय कांग्रेस समिति और सत्याग्रह आंदोलन में शामिल हो गईं । उन्होंने महिला सत्याग्रह समिति के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया । 1930 और 1932 में उन्हें सत्याग्रह आंदोलन में शामिल होने के लिए जेल में डाल दिया गया था । वह आर्यस्थान बीमा कंपनी की संस्थापक सदस्य थीं । वह कोलकाता नगर निगम की नगर पार्षद चुनी गईं । 1942 में उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी भूमिका के लिए गिरफ्तार किया गया था । ज्योतिर्मयी की 22 नवंबर 1945 को पुलिस की गोलीबारी में हत्या कर दी गई जब वे रामेश्वर बनर्जी की मौत का विरोध कर रहे छात्रों के जुलूस का नेतृत्व कर रही थी ।

अमर शहीद वीरांगना ज्योतिर्मयी गंगोपाध्याय अमर रहें, अमर रहें।

(आँचल परिवार त्याग, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर शहीद वीरांगना ज्योतिर्मयी गंगोपाध्याय को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

जब अन्त समय आया तो कह गए कि अब चलते हैं
खुश रहना देश के यारों अब हम तो सफ़र करते हैं ।
जो ख़ून गिरा पर्वत पर वह ख़ून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो क़ुर्बानी ।

-कवि प्रदीप

जो लौट के घर न आए

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका आँचल के इस नियमित स्तम्भ में हम देश और देशवासियों की रक्षा में पिछले एक वर्ष में सर्वोच्च बलिदान देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं । हमारा देश एक ओर जहाँ चीन, पाकिस्तान, आतंकवाद जैसी बाहरी चुनौतियों से मुकाबला कर रहा है वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक और मानव जनित आपदाओं से भी लोहा ले रहा है । इस स्तंभ में देश के ऐसे रण-बाँकुरों की रण-गाथाएँ सुनाने का प्रयास किया जाता है जिन्होंने देश के प्रति अपने कर्तव्य को सबसे ऊपर रखा और ज़रूरत पड़ने पर सर्वोच्च बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटे । अपनी मातृभूमि की आन, बान और शान की रक्षा में ऐसे समर्पित होकर घर से निकले कि कभी लौट नहीं पाए । आशा है कि आप सुधी पाठकों को हमारा यह विनम्र प्रयास अच्छा लगेगा - संपादक)

हवलदार अब्दुल माजिद (9114288Y) 9वीं बटालियन (विशेष बल) पैराशूट रेजिमेंट

हवलदार अब्दुल माजिद वीं बटालियन 9 कश्मीर में सक्रिय-से जम्मू 2011 को 2023 नवंबर 22 के स्क्वाड कमांडर थे। (विशेष बल) पैराशूट रेजिमेंट, राजौरी जिले के वन क्षेत्रों में एक तलाशी अभियान के दौरान, उनका दस्ता राष्ट्रीय 63 राइफल्स बटालियन के कैप्टन एमवी प्रांजल को निकालनेके लिए गया, जो आतंकवादियों की गोलीबारी में गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

भारी गोलीबारी करते हुए, हवलदार अब्दुल माजिद रेंगते हुए आगे बढ़े और कैप्टन एमवी प्रांजल को सुरक्षित क्षेत्र में ले आए और पुनः अपनी स्थिति में वापस लौट आए। असाधारण सामरिक कौशल का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने प्राकृतिक गुफा के पास अपने दस्ते का संचालन किया जहां आतंकवादी छिपे हुए थे और अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। गोलीबारी के दौरान पैर में गोली लगने और खून बहने के बावजूद उन्होंने गुफा में छिपे आतंकवादी को बाहर निकालने के लिए अंदर ग्रेनेड फेंका जिससे घायल आतंकवादी गुफा से बाहर आने के लिए मजबूर हो गया। अपने सैनिकों के लिए खतरे को भांपते हुए, हवलदार माजिद ने तेजी से अपनी स्थिति बदल कर आतंकवादियों पर झपटे । इस क्रम में अपनी चोटों के कारण दम तोड़ने से पहले उन्होंने एक आतंकवादी को करीब से मार दिया गिराया । एक गंभीर रूप से घायल अधिकारी को निकालने और उसके बाद एक कट्टर विदेशी आतंकवादी को ढ़ेर करने के दौरान उनके असाधारण साहस, निस्वार्थता और सबसे विशिष्ट वीरता के लिए, हवलदार अब्दुल माजिद को "**कीर्ति चक्र** से सम्मानित किया "**(मरणोपरांत)**गया है ।

आँचल परिवार हवलदार अब्दुल माजिद (9114288Y) कीर्ति चक्र, की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है ।

सिपाही पवन कुमार (2710816W) ग्रेनेडियर्स/55वीं बटालियन, राष्ट्रीय राइफल्स

सिपाही पवन कुमार को दक्षिण कश्मीर के पुलवामा ज़िले के एक गाँव में 27 फरवरी 2023 को आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट खुफिया जानकारी प्राप्त हुई थी । सिपाही पवन कुमार ने अभेद्य घेरा बिछाने में असाधारण सामरिक कौशल का प्रदर्शन किया । उन्होंने खोजी दल का सामने से नेतृत्व किया और अपने साथी के साथ कमरे की तलाशी शुरु की । जैसे ही वह पहली मंजिल के पास पहुँचे, छिपे हुए आतंकवादियों ने ग्रेनेड फेंके और अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी ।

ऑपरेशनल संयम दिखाते हुए, सिपाही पवन कुमार ने आतंकवादियों को भागने से रोकने के दौरान संपार्श्विक क्षति को रोकने के लिए संयम के साथ जवाबी कार्रवाई की। अपने साथियों के लिए गंभीर खतरे को भांपते हुए, सर्वोच्च साहस और अदम्य भावना के सात आगे बढ़े और एक आतंकवादी के साथ नजदीकी लड़ाई में मार कर उसका हथियार छीन कर दूसरे आतंकवादी को घायल कर दिया । इस तीव्र गोलाबारी में, सिपाही पवन कुमार ने गोली के घावों की परवाह नहीं की और भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपरा के अनुसार अपना सर्वोच्च बलिदान दिया । बाद में मारे गए आतंकवादी की पहचान श्रेणी 'ए' के खूँखार आतंकवादी के रूप में की गई । कर्तव्यपरायणता, अदम्य साहस और अद्वितीय युद्धकौशल प्रदर्शित करने के लिए सिपाही पवन कुमार को कीर्ति चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया है ।

आँचल परिवार हवलदार सिपाही पवन कुमार 2710816)W) कीर्ति चक्र की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है ।

मेजर अंशुमान सिंह (MS-20323K), सैन्य चिकित्सा कोर / 26वीं बटालियन, पंजाब रेजिमेंट

कैप्टन अंशुमान सिंह को 19 मार्च 2020 को आर्मी मेडिकल कोर में नियुक्त किया गया था। कैप्टन अंशुमान ऑपरेशन मेघदूत के तहत चंदन कॉम्प्लेक्स के लिए चिकित्सा अधिकारी के रूप में शामिल हुए । 19 जुलाई 2023 की रात के दौरान, चंदन ड्रॉपिंग ज़ोन में आग लगने की एक बड़ी घटना

देखी गई । कैप्टन अंशुमान सिंह ने आग की आवाज सुनी और अपने फाइबर ग्लास हट से बाहर निकल गए ।

उन्होंने बगल के फाइबर ग्लास हट से 4 से 5 लोगों को बचाया, जो धुएं में ढँकी हुई थी और आग पकड़ने के कगार पर थी । उन्होंने लोगों को सुरक्षित स्थान पर जाने का निर्देश दिया । तभी उन्होंने देखा कि मेडिकल इन्वेस्टिगेशन रूम आग की चपेट में है । वह चिकित्सा सहायता बॉक्स को पुनः प्राप्त करने के लिए अपने फाइबर ग्लास हट के अंदर गए, हालांकि वह अपना रास्ता नहीं बना सके क्योंकि आग की लपटें फैल गई थीं और तेज हवाओं के कारण उनके आश्रय को घेर लिया था । बारबार प्रयासों के बावजूद उसे बचाया नहीं जा सका । आग बुझने के बाद उनके पार्थिव शरीर को आश्रय से निकाला गया । कैप्टन अंशुमान सिंह ने अपनी सुरक्षा की परवाह नहीं करते हुए असाधारण बहादुरी और उच्चतम स्तर के संकल्प का प्रदर्शन किया । भारतीय सेना की बेहतरीन परंपराओं को प्रतिबिंबित करने वाले उनके वीरता और बलिदान के लिए, कृतज्ञ देश द्वारा कैप्टन अंशुमान सिंह को शौर्य चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया है ।

आँचल परिवार मेजर अंशुमान सिंह (MS-20323K) शौर्य चक्र, की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है ।

कैप्टन एम वी प्रांजल (IC-83609N), सिग्नल्स कोर / 63वीं बटालियन, राष्ट्रीय राइफल्स

22 नवंबर 2023 को राजौरी जिले के वन क्षेत्रों में आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में जानकारी मिली थी । उस क्षेत्र में महिलाओं और बच्चों की उपस्थिति भी थी । कैप्टन एम वी प्रांजल उस क्षेत्र में एक छोटी टीम के साथ निगरानी अभियान का नेतृत्व कर रहे थे । गुप्त रूप से कवर बनाए रखते हुए उन्होंने दो आतंकवादियों की हरकतें देखीं। आतंकवादियों ने भी इन्हें देखा और गोलीबारी शुरु कर दी ।

महिलाओं और बच्चों के लिए खतरे को भांपते हुए, अपनी सुरक्षा की परवाह नहीं करते हुए, वह बाहर निकले और उन्हें खतरे से बाहर ले गए । इसी बीच न्यूनतम कवर के बावजूद आतंकवादियों को उलझाए रखा । अपनी टीम के आकार और भारी गोलीबारी के बावजूद, उन्होंने अतिरिक्त सैनिकों के आने तक आतंकवादियों को व्यस्त रखा। इस प्रक्रिया में, वे आतंकवादियों की भीषण गोलीबारी में घायल हो गए और अन्ततः गोलियों के घाव के कारण दम तोड़ दिया। नागरिकों के जीवन को बचाने और आतंकवादियों उलझाए रखने के लिए प्रदर्शित की गई उनकी बहादुरी अनुकरणीय रही जिसके कारण आतंवादियों का सफाया हो सका । मारे गए आतंकवादियों की पहचान क्षेत्र में नागरिकों की हत्या और

सुरक्षा बलों को निशाना बनाने के पीछे के मास्टरमाइंड के रूप में की गई थी। इस सफलता से इलाके में आतंकियों को निर्णायक झटका लगा । भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप कैप्टन एम वी प्रांजल ने कर्तव्यनिष्ठा के क्रम में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया । अद्‌वितीय साहस और निःस्वार्थ कर्तव्यनिष्ठा के लिए कैप्टन एम वी प्रांजल को शौर्य चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया है ।

आँचल परिवार कैप्टन एम वी प्रांजल (IC-83609N) शौर्य चक्र की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है ।

राइफलमैन आलोक राव (G/5031719P), 18 असम राइफल्स

03 मई 2023 को मणिपुर में जातीय दंगे भड़क उठे । बिगड़ती स्थिति को नियंत्रित करने के लिए 18 असम राइफल्स की टुकड़ियों को तैनात किया गया था । राइफलमैन आलोक राव जिले के सबसे संवेदनशील इलाके में तैनात आंतरिक सुरक्षा कॉलम का हिस्सा थे ।

कॉलम को हिंसक गतिविधियों में शामिल गांवों की निगरानी करने वाले एक उच्चतम सामरिक स्थल पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था । 10 मई 2023 को राइफलमैन आलोक राव को लाइट मशीनगन के साथ बंकर में तैनात किया गया था । लगभग 11.30 बजे 10-12 संदिग्ध सशस्त्र विद्रोहियों को 18 असम राइफल्स की टुकड़ी की ओर आते देखा गया । राइफलमैन आलोक राव को अपने पोजिशन और अपने सहयोगियों के लिए एक आसन्न खतरे का आभास हुआ और उन्होंने विद्रोहियों के सशस्त्र समूह को चुनौती दी जिन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी ।

राइफलमैन आलोक राव ने भी जवाबी गोलीबारी की जिसमें उन्हें भागने के लिए मजबूर होना पड़ा । दो - तीन विद्रोही घायल हो गए और इस तरह सैन्य टुकड़ी के उनके सहयोगियों को बचाया गया । हालांकि, इसके बाद हुई गोलीबारी में राइफलमैन आलोक राव को भी गोली लगी । चिकित्सा के लिए उन्हें सैन्य अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्होंने दम तोड़ दिया । उनके अनुकरणीय साहस, बहादुरी और ऑपरेशन के दौरान खुफिया जानकारी के बेदाग अनुप्रयोग, और अपने कर्मियों की सुरक्षा के प्रति पूरी तरह से कर्तव्यनिष्ठा के लिए, राइफलमैन आलोक राव को **शौर्य चक्र (मरणोपरांत)** से सम्मानित किया गया है ।

आँचल परिवार हवलदार राइफलमैन आलोक राव (G/5031618P) शौर्य चक्र, की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है ।

स्रोत - https://www.gallantryawards.gov.in/assets/uploads/home_banner/RepublicDayCeremony,-2024RecipientsofGallantryAwards-.25-01-2024pdf

आइना

श्रीमती वीणा शिरशाट
पर्यवेक्षक

जाने कब कितने युगों से सह रहा है आइना ।
सच क्या है झूठ क्या है कह रहा है आइना ।।

दूसरा कोई देखे पहले खुद को देखना है
सब घरों में शौक से खुश रह रहा है आइना ।

मन करे तो हम किसी से बात कर सकते मगर
मन बना या नहीं बना कह रहा है आइना ।

झूठ अब तो तान कर ऊँचा चढ़ा अकड़ रहा
नम्र नदी की धारा में अब बह रहा है आइना ।

कर रहे तुम हो तमाशे कुछ तो सोचो भी ज़रा
ग़लती तेरी और घर पर दह रहा है आइना ।

ला सको जो लफ्ज़ में अपने पुराने कुछ हिसाब
सत्य को खुद में समेटे गह रहा है आइना ।

“मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ । पर मेरे ही देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सहन नहीं कर सकता” - आचार्य विनोबा भावे

आसमान में चाँद नहीं है

(कविता)

अजीत कुमार
आँ.प्र.प्र.

सुनो कहानी इक छोटी सी
जब चम्पू ने एक्ट किया।
चाँद की यात्रा करने को
नासा ने उसे सेलेक्ट किया।।
ठीक समय पर यान में चढकर
चाँद की यात्रा शुरू हुई।
उड़ते ही धरती पर वीडियो-
कॉलिंग भी थी शुरू हुई।।
आधे रस्ते पायलट बोला-
मुझे दिखाई नहीं दे रहा कुछ।
लपक कर चम्पू आगे आया
हटो, जानता हूँ मैं सब कुछ।।
प्लेन उड़ाना मैंने माँ के
गर्भ में रहकर सीखा है।
अन्तरिक्ष का प्लेन भी तो
नॉर्मल प्लेन सरीखा है।
इधर दरबारी गद्गद् थे और
उधर प्लेन ने लैंड किया।
एटीसी ने प्लेन के पायलट
को तुरंत सस्पेंड किया।
पूछा चम्पू से क्यों लौटा
लाए प्लेन को धरती पर?
मेगा प्लान चौपट कर डाला
आकर प्लेन ने धरती पर?
चम्पू मंद मंद मुस्काए
ग़लती का कोई चांस नहीं है।
आज अमावस का दिन है और
आसमान में चाँद नहीं है।।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है - कमलापति त्रिपाठी

एक दो तीन चार

श्री विनायक बोकड़े
सहा. पर्यवेक्षक

एक दो तीन चार(4 ,3 ,2 ,1)
आज शनीचर कल इतवार
पाँच छह सात आठ(8 ,7 ,6 ,5)
थोड़ा कर लो पूजापाठ-
नौ दस ग्यारह बारह(12 ,11 ,10 ,9)
भैंसा गया नदी में बह
तेरह चौदह पन्द्रह सोलह(16 ,15 ,14 ,13)
चार घटे मिलता है बारह
सतरह अठारह उन्नीस बीस(20 ,19 ,18 ,17)
दर्द भयंकर मारे टीस
इक्कीस बाइस तेइस चौबीस(24 ,23 ,22 ,21)
पैर छुओले लो आशीष ,
आगे पचीस छब्बीस सत्ताइस (27 ,26 ,25)
केवल माँ से कर फरमाइश
अठाइस उन्तीस और तीस (30 ,29 ,28)
ख़बरें लाते ख़बरनबीस

"राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध है।"

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

बचपन से बुढ़ापे की राह पर

श्रीमती नयना केळसकर
सह. पर्यवेक्षक

बचपन में न कुछ पाने की लालसा न कुछ खोने का डर
सुकून-मस्ती-खेलवाले दिन रात अपने और बचपन का सफर
नहीं कभी किसी से हारना नहीं कभी किसी से जीतना
खिलौनों का जो साथ था और नहीं कोई इंसानों की फिकर
न झूठ का बोलबाला न ही फरेब का ज़माना था
हँसकर मिलते थे सबसे, रूठने का न कोई बहाना था

बिना वजह होठों पर हँसी रहती थी
मानों खुशियाँ होठों में फँसी रहती थी
बचपन से निकलकर जवानी शुरु हुई
खुशहाल ज़िन्दगी हक़ीक़त से रू-ब-रू हुई
जवानी के इरादे अलग, चाहतें ज़्यादा वादे कम
भ्रम टूटा तब जान पाए कुछ पूरे-अधूरे रिश्तों का दम
इश्क के ख़ुमार में हँसने रोने का बुखार चढ़ा
प्यार पूरा हुआ तो बेहतर वरना पाँव कहीं बढ़ा

जोश में यारों मत करो कोई भूल
खूबसूरत सपनों को मत करो धूल

गुलिस्ताँ की हसीन जवानी में इसे न रेगिस्तान करो
शस्त्र नहीं जीवन के शास्त्र का तन्मयता से संधान करो
बचपन गया जवानी गई और बुढ़ापा आ गया
जोश, ताक़त, तन्दुरुस्ती को आते ही खा गया
मज़बूत से मज़बूर होते चले गए हम
जवानी को जाते आँखों से देखते रहे हम
बची हुई उम्र सलाह बाँटने में निकलेगी
लोगों को राह दिखाने को नए पथ पर निकलेगी

सब अपने होकर भी न पास होंगे
सुबह, शाम, रात और दिन उदास होंगे
भागदौड़ की ज़िन्दगी से आराम होगा
सुकून ही सुकून होगा नहीं कोई काम होगा
रिश्ते-नाते-मित्र सब छूट जाएँगे
बस, जवानी में कमाया नाम होगा

A WARRIOR IN ME

सुश्री कीर्ति राज
आशुलिपिक

Let the war come close,
Let me prepare to fight

Let me sharpen my sword,
Just be on my side

Let them test my patience
Let me make this alright

Let them make me fear,
I will show them my might

I don't know how many times I will fall on ground
But I know I will stand again like a knight.

A WARRIOR IN ME
का हिंदी काव्यानुवाद
(अनुवादक - जय राम सिंह)

जय राम सिंह
क. अनुवादक

हार नहीं मानूँगी

युद्धभेरी अब बजने दो
मुझको भी अब सजने दो

तलवारें मेरी ताक़त हैं
म्याँ से बाहर भँजने दो

मुझे परीक्षा लेनी है अपनी ही अब
समय-पट्ट पर मुझको उत्तर लिखने दो

जिन्हें गुमाँ है मैं उनसे डर जाउँगी
उनके सम्मुख अपना जीवट रखने दो

मार्ग में चाहे जितने फिसलन बैठे हों
मुझको हर फिसलन पर पाँव रखने दो

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है ।" - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

पापा की परी

सुश्री कीर्ति राज
आशुलिपिक

ये जो तुम साहस अपना मुझे दिखा रही हो,
मैं जानता हूँ घबराहट अपनी तुम छुपा रही हो ।

किसका दिल करता है घर को छोड़ जाने को,
तुम वापस आने के लिए भी तो ज़ोर लगा रही हो ।

वैसे जगह खूबसूरत है बहुत जहाँ तुम जा रही हो,
पर हैरानी यह कि तुम उल्टा सोचे जा रही हो ।

भरोसा करना सीखो तुम अब खुद पर भी,
और यकीन मानो बहुत सही दिशा में जा रही हो ।

सत्य है कि हमारा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है,
और तुम्हें फिर भी लगता है तुम हमसे दूर जा रही हो ।

"हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।" - विलियम केरी

LIBERTY TO DREAM

श्री रॉबर्ट सिम्टे
लेखापरीक्षक

At dusk, under a tree
I gaze onto the mountains
Enchanting it is from my view
I say to myself
Tempestuous sky awakens my dead spirit
Reminding me of my Youth when
I lived as if I could conquer anything.

The storm would calm at my sight
Fear would enter in to my rivals
On the contrary, buds would blossom
Branches would bend giving me respect
A melodious voice, brings me to reality

Was that me or something I wanted
Nevertheless, we are at liberty to dream
Sipping tea with your Love
On hammock as the sun fades out
What more can I ask for? I smile

आजादी से स्वप्न तक

जय राम सिंह
क. अनुवादक

शाम के समय, एक पेड़ के नीचे
मैं पहाड़ों पर टकटकी लगाता हूं
मैं स्वयं से कहता हूँ इसका जयगान करो
आकाशी सरसराहट मेरी सुषुप्तात्मा को जगाती है
मुझे मेरी जवानी की याद दिलाती है जब
मुझे लगता था कि सब कुछ जीत लूँगा

तूफान मुझे देखकर शांत हो जाएगा
मेरे प्रतिद्वंद्वियों का डक बढ़ जाएगा
लेकिन इसके विपरीत, कलियाँ खिल जाएंगी
शाखाएं मेरे सम्मान में झुक जाएंगी
एक मधुर आवाज, मुझे यथार्थ में ले आएगी

क्या वह मैं था या वह जो मैं चाहता था
ख़ैर, हम सपने देखने के लिए स्वतंत्र हैं
अपने प्यार के साथ चाय की चुस्की लें
सूरज के ढ़लते ही झूले पर निकलना
और क्या है जिसे मैं कह पाऊँ बर्फ का पिघलना

"हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असम्भव है" - गिरिधर शर्मा

अरुणाचल प्रदेश के अनछुए सौंदर्य की खोज: एक व्यक्तिगत यात्रा

श्री ज्योतिमय बाइलुंग
निदेशक (प्रशासन)

परिचयः

भारत के पूर्वोत्तर भाग में बसा हुआ अरुणाचल प्रदेश एक छिपा हुआ स्वर्ग है जो अक्सर मुख्यधारा के पर्यटन की परिधि से बाहर रहता है। इस करामाती राज्य में अपने प्रारंभिक वर्षों को बिताने के बाद ट्यूटिंग, पॉलिन, कानुबारी, एनीनी और रोइंग जैसे आंतरिक स्थानों के सुरम्य स्थानों के बीच चहलकदमी करते हुए, मैं अरुणाचल प्रदेश को परिभाषित करनेवाले अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य और जैव-विविधता को प्रमाणित कर सकता हूं।

इस लेख में, मैं इस नैसर्गिक वातावरण में बड़े होने के अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करूंगा, और अभी तक कम जाने गए आश्चर्यजनक स्थलों पर भी प्रकाश डालूंगा जिन्हें अभी भी रोमांचक पर्यटकों की प्रतीक्षा है ।

बचपन का इतिहास:

मेरे पिताजी का पदस्थापन हमारे परिवार को अरुणाचल प्रदेश के विभिन्न कोनों में ले गई जिनमें से प्रत्येक परिदृश्य, संस्कृतियों और अनुभवों का एक अनूठा खाका पेश करता है। ट्यूटिंग के जीवन-प्रवास की विशेषता चमकदार सियांग नदी (तिब्बत में त्सांगपो और असम में ब्रह्मपुत्र या लुइट के रूप में जाना जाता है) और हरी-भरी घाटियों के किनारे कई पिकनिक थे जो हमारे खेल के प्राकृतिक मैदानों के रूप में कार्य करते थे । पॉलिन ने अपने मनमोहक वातावरण के साथ मुझे इस क्षेत्र की शांत सुंदरता से परिचित कराया। कनुबारी, अनीनी और रोइंग ने रोमांच के अपने स्वयं के स्वाद लाए; घने जंगलों, घुमावदार नदियों और विशाल खेल के मैदानों के साथ, जो हर दिन एक नया अन्वेषण कराते थे।

प्रदूषण की अनुपस्थिति और हवा और पानी की नैसर्गिक गुणवत्ता मेरे बचपन की विशेषताओं को परिभाषित कर रही थी। इन तत्वों ने न केवल हमारे शारीरिक सौष्ठव में योगदान दिया बल्कि पर्यावरण के लिए आदर की गहरी भावना भी पैदा की। नदियाँ जीवन से भरी हुई थीं, घाटियाँ विदेशी पक्षियों की पुकार से गूंजती थीं और जंगल जैव विविधता का खजाना थे।

सुदीर्घ शैक्षिक यात्रा:

अरुणाचल प्रदेश में पले-बढ़े होने का मतलब खानाबदोश शैक्षिक जीवन को अपनाना था। मैंने कम से कम आठ अलग-अलग स्कूलों में पढ़ाई की, जिनमें से प्रत्येक विविध संस्कृतियों और समुदायों की झलक प्रदान करता था जो सिर्फ इसी राज्य में मिलती हैं । इन समुदायों में बनी दोस्ती सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का एक दस्तावेज थी जो अरुणाचल प्रदेश के सांस्कृतिक परिदृश्य को परिभाषित करती है।

छिपे हुए खजाने:

जबकि तवांग और बोमडिला जैसी जगहें नियमित रूप से पर्यटकों की भीड़ को आकर्षित करती हैं, अरुणाचल प्रदेश में कई छिपे हुए रत्न खोजे जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ये कम ज्ञात गंतव्य अछूते प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्ध जैव विविधता और एक सांस्कृतिक मानचित्र को रेखांकित करते हैं जो जितना विविध है उतना ही जीवंत है।

जीरो घाटी:

निचले सुबनसिरी जिले में बसी जीरो घाटी प्रकृति प्रेमियों और साहसिकता चाहनेवालों के लिए एक स्वर्ग है। हरे-भरे परिदृश्य, धान के खेत और अद्वितीय अपातानी आदिवासी संस्कृति जीरो घाटी को एक मनोरम गंतव्य बनाती है। घाटी की सुरम्य पृष्ठभूमि में आयोजित जीरो संगीत समारोह, इस प्राचीन भूमि में एक समकालीन रंग भरता है।

मेचुका:

पश्चिम सियांग जिले में मेचुका स्थित है, जो एक छिपा हुआ स्वर्ग है जिसने हाल ही में लोगों का ध्यान आकर्षित करना शुरू किया है। बर्फ से ढ़ँकी चोटियों से घिरा, मेचुका ट्रेकिंग और स्थानीय मेचुका मठ की सैर के लिए लुभावने दृश्य और अवसर प्रदान करता है।

दापोरिजो:

ऊपरी सुबनसिरी जिले में स्थित दापोरिजो, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का मिश्रण-बिंदु है। सुबनसिरी और सिप्पी नदियों का संगम शहर की प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ाता है। टैगिन और गालो जनजातियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत यहां चरम पर है।

मेहाओ वन्यजीव अभयारण्य:

वन्यजीवन के प्रेमी लोगों को मेहाओ वन्यजीव अभयारण्य अवश्य जाना चाहिए। रोइंग के पास स्थित यह अभयारण्य वनस्पतियों और जीवों की विविध श्रेणियों का घर है, जिसमें मायावी हिम तेंदुआ भी शामिल है। हरे-भरे जंगलों से घिरी मेहो झील पक्षीदर्शन (बर्डवॉचिंग) के लिए एक उत्तम स्थान है।

नामदाफा राष्ट्रीय उद्यान:

प्रकृति में वास्तव में अनुरक्त अनुभव के लिए, चांगलांग जिले में नामदाफा राष्ट्रीय उद्यान अद्भुत है। भारत के सबसे बड़े राष्ट्रीय उद्यानों में से एक के रूप में, यह लुप्तप्राय हिम तेंदुए और हूलॉक गिब्बन सहित वनस्पतियों और जीवों की एक अविश्वसनीय विविधता समेटे हुए है। नामदाफा के घने जंगलों में ट्रेकिंग करने जैसा रोमांचकारी अनुभव कहीं और नहीं मिल सकता ।

प्राचीनता का संरक्षण:

चूंकि अरुणाचल प्रदेश अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है, इसलिए पर्यटन को निरंतरता की मानसिकता के साथ देखना महत्वपूर्ण है। इन स्थानों की अछूती सुंदरता उनका सबसे बड़ा आकर्षण है, और जिम्मेदार पर्यटन उस क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन और सांस्कृतिक अखंडता को संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

समुदाय आधारित पर्यटन:

समुदाय-आधारित पर्यटन यात्रियों को स्थानीय समुदायों के साथ जुड़ने का अवसर देता है, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है और पर्यटन के लाभ जमीनी स्तर तक पहुंचते हैं। स्थानीय लोगों की निगरानी में गृह-निवास और निर्देशित पर्यटन एक प्रामाणिक अनुभव प्रदान करते हैं।

पर्यावरण संरक्षण:

पर्यटन के पारिस्थितिक पदचिह्नों को कम से कम रखने के प्रयास किए जाने चाहिए। सख्त नियम और दिशानिर्देश नाजुक पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करने में मदद कर सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि भविष्य की पीढ़ियां उसी प्राचीन परिदृश्य का आनंद ले सकें जो आज हमें मोहित करते हैं।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता:

अरुणाचल प्रदेश की विविध संस्कृतियों को समझना और उनका सम्मान करना सर्वोपरि है। यात्रियों को स्थानीय रीति-रिवाजों, परंपराओं और शिष्टाचार के प्रति सचेत रहना चाहिए, जो सकारात्मक और पारस्परिक रूप से समृद्ध सांस्कृतिक आदान-प्रदान में योगदान करते हैं।

सारांशः

अरुणाचल प्रदेश के मनमोहक परिदृश्यों की मेरी यात्रा ने मेरे दिल पर एक अमिट छाप छोड़ी है। नदियों, घाटियों और जंगलों की यादें, सांस्कृतिक मानचित्र की समृद्धि के साथ मिलकर, मेरे विश्वदृष्टि को गहराई से आकार दिया है। अब जबकि अरुणाचल प्रदेश के छिपे हुए खजाने दुनिया को ज्ञात हो रहे हैं, आइए हम आने वाली पीढ़ियों के लिए इस प्राचीन स्वर्ग को संरक्षित और संरक्षित करने का प्रयास करें। जिम्मेदार पर्यटन और संरक्षण के लिए एक सामूहिक प्रतिबद्धता के माध्यम से, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि अरुणाचल प्रदेश की सुंदरता मानवता के लिए एक शाश्वत उपहार बनी हुई है। मैं सभी पाठकों को अपने जीवन में कम से कम एक बार अरुणाचल की सुंदरता में डूबने के लिए आमंत्रित करता हूं।

"सच्चा राष्ट्रीय साहित्य राष्ट्रभाषा से उत्पन्न होता है।" - वाल्टर चेनिंग

सुश्री शिवानी
स.ले.प.अ.

मेरी उदयपुर की एकल यात्रा

बात है अगस्त 2021 की जब एसएएस की मेन्स परीक्षा खत्म ही हुई थी। सारा तनाव जा चुका था और मैं सुकून अनुभव कर रही थी । लेकिन फिर मन में विचार आया कि कहीं घूम कर आती हूँ । अभी तक परिवार के साथ घूमती हुई आई हूँ तो अकेले जाने के लेकर थोड़ी सी चिंतित थी ।

लेकिन फिर मन में आया कि नहीं, अब तो जाना ही चाहिए, अभी कोशिश नहीं की तो हर बार मौका गँवाती ही जाउँगी । मन ने सोचा जो कभी नहीं किया वही करती हूँ । बस, फिर तुरंत ही मन बनाया कि चलो उदयपुर घूम कर आती हूँ । एक रात पहले ही सुबह की बस की टिकट कर लो । चूँकि उन दिनों में मैं अहमदाबाद में ही रहा करती थी तो वहाँ से उदयपुर तक का सफर मात्र 6-7 घंटे का ही था । उदयपुर निकलना था तो रात ही जल्दी-जल्दी में थोड़ा सामान पैक कर लिया और सो गई । सुबह 5.30 की बस थी जिसे गीतामंदिर से रवाना होना था । लेकिन अपने दिमाग का ज्यादा ही उपयोग करके मैं पालड़ी बस स्टेशन चली गई सोचा कि यहाँ से तो बस जाती ही है । तो शायद वह बस गीतामंदिर से चलकर पालड़ी होती हुई उदयपुर जाएगी । फिर क्या था, पालड़ी बस स्टेशन पर पहुँची तो पता लगा कि बस पालड़ी होकर नहीं जाती । इस तरह मैंने वह बस मिस कर दी । लेकिन हार नहीं मानी, पहली एकल यात्रा का जोश ही कुछ और था । फिर वहीं पर एक बस कंडक्टर को पूछा कि उदयपुर के लिए बस कहाँ से मिलेगी । उन्हेंने बताया कि बस गीतामंदिर से ही जाएगी । आपको टिकट यहीं से कर देते हैं और आप ऑटो लेकर गीतामंदिर चली जाइए । इस तरह मैं गीतामंदिर पहुँची और अपनी उदयपुर की बस में बैठ गई और रवाना हो गई । अपनी उदयपुर की यात्रा की बहुत ही प्यारी और कभी न भुलानेवाली यादों को सँजोने के लिए ।

फतेहसागर झील

अब दिन में उदयपुर बहुँच तो गई वहाँ कोई ठिकाना तो था नहीं, 2-3 होटलों के देखने के बाद एक जगह होटेल पसंद आया । समय दिन का 2 बज चुका था । खाया-पिया, तरोताजा होने के बाद तैयार होकर निकल गई रिसेप्शन पर जाकर पूछा कि अभी कहाँ-कहाँ घूमने जाया जा सकता है । वहाँ से कुछ जगहों के सुझाव मिलने के बाद सोचा कि फतेहसागर झील जाकर आती है, वहाँ से फिर झील घूमने निकल गई । वह अनुभूति मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती । झील में नौका-विहार किया । वाकई उदयपुर की खूबसूरती देखते ही बनती है । इसे पूर्व का वेनिस यूँ ही नहीं कहते । फतेहसागर लेक घूमते-घूमते ही मेरी मुलाकात

एक यात्री समूह से हुई । वे बहुत ही अच्छे लोग थे, बाकी की अगले दो दिनों की ट्रिप मेरी इन्हीं लोगों के साथ हुई । ये लोग आज भी मेरे अच्छे दोस्त हैं । बाद हम पिछोला झील घूमने निकल गए । यहाँ की सुन्दरता निहारने के बाद हस निकल पड़े अम्बराई घाट वहाँ का मनमोहक दृश्य देखते ही बनता है । वहाँ बैठकर झील में पाँव डालकर सुकून के बहुत ही अच्छे पल बिताए, साथ ही साथ मन में ये विचार भी आ रहा था कि आगर सुबह की बस छूट जाने के बाद यहाँ आने की दृढ़ इच्छा न होती तो अभी जो अनुभूति हो रही है, वो कभी अनुभाव न होपाती । उदयपुर का इतना समृद्ध इतिहास, लुभावने परिदृश्य देखने को न मिल पाते । इस शहर के जीवंत रंग शांति और प्रेरणा के कैनवास को चित्रित करते हैं । अम्बराई घाट पर खूबसूरत शाम बिताने के बाद मैं नए दोस्तों को शुभ रात्रि कह अपने होटेल की तरफ चली गई । आगले दिन मैं सिटी पैलेस घूमने निकल गई, नए दोस्तों के साथ । मेरी उदयपुर की यात्रा ऐसी यात्रा थी जिसमें कुछ भी सुनिश्चित नहीं था, मैं बस बहाव में बही जा रही थी और उन्हीं पलों को अच्छे से जिए जा रही थी । फिर चाहे वह सिटी पैलेस की मस्ती हो, सज्जनगढ़ किले तक पहुँचने की यात्रा हो या फिर कुम्भलगढ़ सी सुन्दरता, हर याद आज

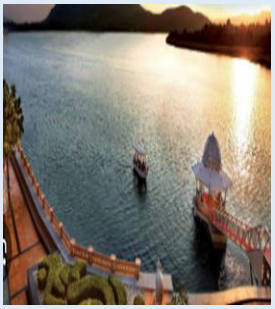

पिछोला झील

अम्बराई घाट

सज्जनगढ़ किला

इसकी यादें आज भी इतनी तरोताजा है मानो कल की ही बात है। यह थी मेरी उदयपुर की छोटी सी सुन्दर सी यात्रा ।

जिन्दगी में कभी भी घूमने का मौका मिले तो उसे कभी गँवाएँ नहीं, न जाने आपको आपकी ताउम्र साथ चलेवाली प्यारी सी यादें मिल जाएँ जिन्हें आप याद कर कभी भी हँस सकते हैं ।

"प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती ।" - नेताजी सुभाषचंद्र बोस

बेटे के नाम पत्र

श्री भरत लाल मीणा,
स.ले.प.अ

प्यारे बेटे,

ऑटिज्म, तुम जो हो उसका एक हिस्सा मात्र है ! यह तुमको परिभाषित नहीं करता या तुम्हारी क्षमता को सीमित नहीं करता। मुझे तुम्हारी अद्‌वितीय क्षमताओं, तुम्हारे सुंदर दिमाग और तुम्हारे पास मौजूद अविश्वसनीय ताकत पर विश्वास है।

मैं चाहता हूं कि तुम याद रखो कि तुम इस यात्रा में अकेले नहीं हों । इस यात्रा मैं हर कदम पर तुम्हारे साथ खड़ा हूं ! हम एक टीम हैं और साथ मिलकर हम अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चुनौती से पार पा सकते हैं। मैं तुम्हारा वकील, तुम्हारा सहयोगी और तुम्हारा सबसे बड़ा जय-जयकार हूं। तुम्हारे लिए मेरे प्यार की कोई सीमा नहीं है और मैं हमेशा तुम्हारे अधिकारों, स्वीकृति और इस दुनिया में शामिल होने के लिए लड़ूंगा।

मैं समझता हूं कि दुनिया हमेशा तुमको मेरी तरह नहीं समझ सकती है, लेकिन कृपया कभी भी अपनी योग्यता पर संदेह न करना या निराश न होना । तुम्हारे मतभेद तुमको विशेष और अद्‌वितीय बनाते हैं। अपनी शक्तियों को अपनाओ, अपने जुनून को तलाशो और अपनी प्रतिभा को चमकने दो। दुनिया को तुम्हारे अविश्वसनीय दृष्टिकोण, तुम्हारी रचनात्मकता और तुम्हारी अप्रयुक्त क्षमता की आवश्यकता है।

अपने प्रति दयालु होना याद रखो । ऑटिज़्म कुछ बाधाएँ प्रस्तुत कर सकता है, लेकिन यह तुमको उल्लेखनीय शक्तियाँ भी प्रदान करता है। अपनी उपलब्धियों का जश्न मनाओ, चाहे वे दूसरों को कितनी ही छोटी क्यों न लगें । आगे बढ़ाया गया हर कदम, हासिल किया गया हर मील का पत्थर आपके लचीलेपन और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है ।

जान लो कि मैं यहां तुम्हारी बात सुनने, सीखने और तुम्हारे साथ बढ़ने के लिए हूं। तुम्हारे अनुभवों और अंतर्दृष्टि ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है और मैं तुम्हारा पिता बनने का अवसर पाने के लिए आभारी हूं। मैं हमेशा तुम्हारा समर्थन करने, खुद को अभिव्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करने और जब हम एक साथ इस दुनिया में यात्रा कर रहे हैं तो तुमसे सीखने का वादा करता हूं।

सबसे बढ़कर, मेरे प्यारे बेटे, कृपया याद रखना कि आपसे बिना शर्त प्यार किया जाता है। आप प्यार, सम्मान और खुशी के पात्र हैं। तुम्हारा ऑटिज्म तुम्हारे व्यक्तित्व का एक खूबसूरत हिस्सा है और यह हमारे जीवन में एक अनोखी रोशनी लाता है। कभी भी किसी को यह महसूस न होने दों कि तुम खुद से कमतर हो ! तुम मजबूत हो, तुम सक्षम हो, और तुमको हद से ज्यादा प्यार किया जाता है।

मेरे सारे प्यार के साथ, तुम्हारा पापा।

माथेरन : मुंबई का हिल स्टेशन

प्रवीण नाफड़े
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

माथेरान एक ऑटोमोबाइल मुक्त हिल स्टेशन और महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के कर्जत तालुका में एक नगरपालिका परिषद है । माथेरान मुंबई महानगर क्षेत्र का हिस्सा है और भारत के सबसे छोटे हिल स्टेशनों में से एक है । यह पश्चिमी घाट क्षेत्र में समुद्र तल से लगभग 800 मीटर (2,625 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है । यह मुंबई से लगभग 90 किमी और पुणे से 120 किमी दूर है । इन शहरी क्षेत्रों से इसकी निकटता इसे लोगों के लिए सप्ताहांत की छुट्टी के लिए पसंदीदा स्थान बनाती है ।

माथेरान, जिसका मराठी में अर्थ है "माथे पर जंगल" (पहाड़ों का), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा घोषित एक पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र है । यह एशिया का एकमात्र ऑटोमोबाइल मुक्त हिल स्टेशन है । इलाके में कई होटल और पारसी बंगले हैं । पुरानी ब्रिटिश औपनिवेशिक वास्तुकला माथेरान में संरक्षित है । सड़कें लाल लेटराइट मिट्टी से बनी हैं ।

मौसम

अक्टूबर से नवंबर - मानसून इस समयावधि से पहले पीछे हट जाता है, जिससे तापमान ठंडा हो जाता है, लेकिन आर्द्र नहीं
। ऐसा मौसम दर्शनीय स्थलों की यात्रा की सुविधा प्रदान करता है ।

दिसंबर से फरवरी - सर्दियों के महीने ठंडे होते हैं और तापमान आमतौर पर 11 डिग्री सेल्सियस से ऊपर रहता है। जबकि दिन ज्यादातर धूप वाले होते हैं, शाम और सुबह थोड़ी सर्द हो जाती है। जोड़े अपने हनीमून के लिए माथेरान जाने के लिए इस समय अवधि को पसंद करते हैं।

मार्च से मई - दिन के दौरान तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक जा सकता है। हालांकि, तापमान के बावजूद पर्यटक नाराजगी की रिपोर्ट नहीं करते हैं।

जून से सितंबर - इस अवधि में माथेरान में भारी वर्षा होती है।

माथेरान रेल और सड़क मार्ग से मुंबई (100 किमी) और पुणे (120 किमी) से जुड़ा हुआ है, निकटतम रेलवे स्टेशन नेरल के तलहटी शहर में है। निकटतम हवाई अड्डा छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, मुंबई है

माथेरान शहर के केंद्र में एक नैरो गेज रेलवे स्टेशन है। पुराना माथेरान हिल रेलवे नेरल के लिए कई दैनिक ट्रेनें प्रदान करता है। टॉय ट्रेन नेरल जंक्शन पर मेनलाइन रेल मार्ग से जुड़ी हुई है।

नेरल रेलवे स्टेशन से अमन लॉज तक टैक्सी सेवा उपलब्ध है, जबकि नेरल और कर्जत दोनों रेलवे स्टेशनों से बस सेवाएं उपलब्ध हैं। माथेरान के अंदर नगर पालिका द्वारा संचालित एम्बुलेंस को छोड़कर किसी भी वाहन को जाने की अनुमति नहीं है। अमन लॉज से परे, केवल उपलब्ध परिवहन सुविधाएं घोड़े और हाथ से खींचे जाने वाले रिक्शा हैं।

कुल मिलाकर, माथेरान में घूमने के लिए 40 बिंदु, दो झीलें, दो पार्क, चार प्रमुख पूजा स्थल और एक रेस कोर्स है। माथेरान पर कुछ प्रमुख दर्शनीय स्थल निम्नलिखित हैं:

अलेक्जेंडर पॉइंट रामबाग पॉइंट लिटिल चौक पॉइंट बिग चौक पॉइंट वन ट्री हिल पॉइंट बेल्वेडियर पॉइंट लॉर्ड्स पॉइंटलॉर्ड्स पॉइंट सेलिया पॉइंट इको पॉइंट मंकी पॉइंट पोर्क्यूपाइन पॉइंट (इसे सनसेट पॉइंट के रूप में भी जाना जाता है) पैनोरमा पॉइंट (जिसे सनराइज पॉइंट भी कहा जाता है) खंडाला पॉइंट माधवजी पॉइंट लुईसा पॉइंट मायरा पॉइंट मारिया पॉइंट

गार्बेट पॉइंट: माथेरान में यह सबसे कम देखा जाने वाला बिंदु है क्योंकि यह बहुत दूर है ...

किले: हिल स्टेशन के पास दो मध्ययुगीन किले हैं, वे हैं प्रबलगढ़ और पेबकिला। विकटगढ़ किला भी एक ट्रेकिंग डेस्टिनेशन है, जो माथेरान की मेजबानी करने वाली पहाड़ी से जुड़ा हुआ है। हॉर्स रेस कोर्स: ओलंपिया रेस कोर्स (सर धुंजीभाई बोमनजी द्वारा 1892-93 में स्थापित)। माथेरान रेलवे स्टेशन

धार्मिक स्थल पिसारनाथ मंदिर माथेरान शिव मंदिर

माथेरान को पानी की आपूर्ति शार्लोट झील से की जाती है। मानसून के दौरान यह बांध ओवरफ्लो हो जाता है, जिससे यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन जाता है। माथेरान में "पेमास्टर पार्क" का रखरखाव स्थानीय नगर पालिका

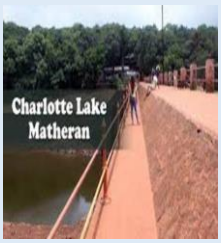

द्वारा किया जाता है। यहां बच्चों और शिवालयों के लिए खेलों का आयोजन किया जाता है। माथेरान में विभिन्न ट्रेकिंग मार्ग हैं, जिन्हें पर्यटकों द्वारा पार करना आसान बताया जाता है: यह मार्ग दोधानी गांव से शुरू होता है और माथेरान में सनसेट पॉइंट पर समाप्त होता है। यह ट्रेकर्स के लिए सबसे लोकप्रिय मार्ग है। यह मार्ग धोम बांध के पास एक छोटे से आदिवासी गांव "सागाचीवाड़ी" से शुरू होता है। यह दूसरा सबसे लोकप्रिय मार्ग है।

यह मुंबई से और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर माथेरन हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। शहर के कोलाहल से दूर कुछ घंटे प्रकृति की गोद में बैठना, वह भी नीरव शांति के साथ, सचमुच सँजो लेनेवाला अनुभव देता है । जब भी समय मिले, एक बार माथेरन की सैर अवश्य करें ।

"विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।"

- वाल्टर चेनिंग

भोजन जीवन है, इसका आनंद लें

श्रीमती नयना केळसकर
सह. पर्यवेक्षक

पिछले कुछ वर्षों में ऋजुता दिवेकर का नाम आहार विशेषज्ञ के रूप में लोकप्रिय हो गया है। करीना कपूर से लेकर कई बॉलीवुड कलाकार दिवेकर की डाइट सलाह को फॉलो करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी दिवेकर के फिटनेस फॉर्मूले की तारीफ की हैं।

वह हमेशा चावल-आमटी, रोटी-सब्जियों के नियमित आहार के महत्व को समझाती हैं। वह हमेशा आहार में हल्दी-दूध, देशी घी से लेकर पोहा, उपमा जैसे पारंपरिक खाद्य पदार्थों के महत्व के बारे में बात करती हैं। वह 12 महीने के वजन घटाने के कार्यक्रम के लिए 20,000 डॉलर लेती है, जहां वह एक ग्राहक से महीने में दो बार आधे घंटे के लिए लेती है। यह $1,666 प्रति घंटा है और इसमें प्रवेश के लिए दो महीने का इंतजार करना पड़ता है।

पर जनवरी 2018 से उन्होने ऑनलाइन 12-सप्ताह के मुफ्त वजन-घटाने कार्यक्रम का प्रयोग किया। उसमें पांच घंटों के भीतर, 40 देशों से 75,000 लोगों ने साइन अप किया। वह अब नियमित रूप से अपने प्रशंसकों के लिए भोजन और व्यायाम वीडियो, डाइटिंग टिप्स और निजी पलों के स्नैपशॉट पोस्ट करती हैं। जो की बहुत महत्वपूर्ण है, उसमे उन्होने बताया है कि 'आपको जो पसंद है वह खाएं' लेकिन व्यायाम से समझौता न करें। वजन कम करने की कोशिश करें लेकिन ध्यान रखें कि उन प्रयासों में आप अपना स्वास्थ्य न खोएं। उनका नजरिया स्थानीय और मौसमी खाद्य पदार्थों को अपनाने, ध्यानपूर्वक खाने को बढ़ावा देने और संतुलित जीवनशैली में पोषण और व्यायाम दोनों को शामिल करने के इर्द-गिर्द घूमता है। यह दृष्टिकोण पर्यावरण की प्राकृतिक लय के अनुसार खाने की सदियों पुरानी बुद्धि के अनुरूप है। स्थानीय और मौसमी खाद्य पदार्थ आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं और लंबे समय तक भंडारण या परिवहन से नहीं गुजरते हैं, जिससे पोषक तत्वों की हानि हो सकती है।

'अच्छा आहार और व्यायाम स्वस्थ जीवन का रहस्य है', यह एक प्रसिद्ध कहावत है जो हर कोई स्कूल के दिनों से सुनता है । लेकिन हर किसी के लिए जीवन भर इसे अपनाना सहज नहीं है । हालांकि कोरोना काल में हर किसी की स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है, लेकिन खानपान को लेकर अभी भी पर्याप्त जागरूकता नहीं है।

स्थानीय रूप से उगाए गए फलों, सब्जियों और अनाज को आहार में शामिल करके, व्यक्ति विभिन्न प्रकार के पोषक तत्वों से लाभ उठा सकते हैं, जो समग्र स्वास्थ्य और कल्याण का समर्थन

करते हैं। इसके अतिरिक्त, स्थानीय उपज का चयन टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल भोजन प्रथाओं में योगदान देता है।

वजन घटाने के दौरान भी वह आहार में घी या ताजा मक्खन को शामिल करने को कहती हैं। घी एक एसा स्रोत है, जिसमें आवश्यक फैटी एसिड और घुलनशील विटामिन शामिल हैं। भोजन में मध्यम मात्रा में घी शामिल करने से वसा में घुलनशील विटामिन जैसे ए, डी, ई और के का अवशोषण बढ़ सकता है।

इसके अलावा, घी के तृप्तिदायक गुण तृप्ति की भावना में योगदान करते हैं, अधिक खाने से रोकते हैं। रुजुता कम मात्रा मे खाना खाने के महत्व पर जोर देती है, इस बात पर प्रकाश डालती है कि दैनिक भोजन में थोड़ी मात्रा में घी शामिल करना संतुलित और पौष्टिक आहार का हिस्सा हो सकता है। तेजी से भागती दुनिया में जहां भोजन अक्सर जल्दबाजी में किया जाता है या स्क्रीन के सामने खाया जाता है, भोजन के दौरान उसकी रुचि लेकर खाने से उसका समग्र स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। माइंडफुल ईटिंग में भोजन के स्वाद, सुगंध और जायके सहित खाने के संवेदी अनुभव पर पूरा ध्यान देना शामिल है। जिसमे जल्दी पेट भरने का संकेत मिलता है।

रुजुता भोजन, खासकर नाश्ता छोड़ने की आम प्रथा के खिलाफ दृढ़ता से सलाह देती हैं। नियमित भोजन पूरे दिन रक्त शर्करा के स्तर को स्थिर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब भोजन छोड़ दिया जाता है, तो शरीर में रक्त शर्करा में उतार-चढ़ाव का अनुभव हो सकता है, जिससे दिन में बाद में खाने की लालसा बढ़ जाती है और अधिक खाने की इच्छा होती है।

वह अपने ग्राहकों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं और वजन घटाने के लक्ष्य के आधार पर अपना आहार बनाती है, लेकिन भोजन को प्रोटीन, फाइबर और कार्ब्स में विभाजित नहीं करती है। न ही वह भाग निर्दिष्ट करती है।

उनके आहार में पारंपरिक भारतीय व्यंजन शामिल हैं, और वह खाने की चाह को पूरा करती हैं। वह कहती हैं, आम खाएं, अपनी स्थानीय डेयरी से गैर-ब्रांडेड, नियमित दूध पिएं, सफेद चावल और दाल में घी मिलाएं, गन्ने का रस पिएं, अपनी चाय में चीनी मिलाएं। साथ ही, वह ग्राहकों से अपने छह सरल नियमों का पालन करने पर जोर देती है, जिसमें सूर्योदय के करीब उठना, जागने के 10 मिनट के भीतर फल या मेवे खाना, घर का बना नाश्ता करना और तीन बड़े भोजन के बजाय उन्हें तोड़ना शामिल है। नीचे और हर दो घंटे में खाना।

रुजुता दिवेकर इस बात पर ज़ोर देती है कि घर पर जो दादी और नानी के बताये हुए रेसिपी है उनका खाने में इस्तेमाल करो तथा इसके अतिरिक्त स्थानीय उपज का चयन टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल भोजन प्रथा मे योगदान देता है।

उनके सभी पोस्ट और वीडियो एक ही संदेश के इर्द-गिर्द घूम रहे हैं: "हमारा पारंपरिक भोजन ज्ञान अमूल्य है क्योंकि इसे सदियों से आजमाया और परखा गया है, और यह उद्योग समर्थित विज्ञान हमें जो बता रहा है, उससे बेहतर है"।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है - सुमित्रानंदन पंत

आँचल

(कहानी)

अजीत कुमार
आँ.प्र.प्र.

- "सुनो कल हम बाहर नहीं गए। आज मीटिंग जल्दी ख़त्म करके आ रहा, डिनर के लिए चलेंगे।"

वेद की बातें सुन नैना की आँखें ख़ुशी से चमक गईं, मगर अगले ही पल सास का ख्याल आया और चमक की जगह मायूसी ने ले लिया।

- "मम्मी जी का क्या करेंगे।"

- "अरे। माँ के लिए खाना बना दो। मैं साढ़े सात तक आ जाउँगा। अच्छा सुनो, वो जो गुलाबी साड़ी लखनऊ से मैं लाया था न, वही पहन लेना, मेरी जानाँ । और हाँ, बाल आज खुले रखना।"

ब्लश करती नैना किचन में चली गई, मगर फिर याद आया, तो बाहर आई और सासु माँ को बता दिया कि वे दोनों खाने के लिए बाहर जा रहें हैं। सासु माँ बग़ैर कुछ बोले, पड़ोसी के यहाँ चली गई और नैना न जाने डेढ़ घण्टे तक क्या सब करती रही।

गाड़ी का हॉर्न सुन कर भागते हुए बाहर आई । वेद हाथों में उसके पसन्द के 'दिल' वाले लाल गुब्बारे लिए मुस्कुरा रहा था। नैना बच्चों की तरह भाग कर लिपट गई । वेद को याद आ रहा था कि कैसे कल पूरी रात पीठ फेर कर सोई रही और सुबह भी मुँह फूला था। नैना में दुनियादारी की कम समझ थी और बचपना ज्यादा। उसी पर तो वो मर मिटा था।

- "अच्छा चलो तुम तो तैयार ही हो, मैं जल्दी से फ्रेश हो लेता हूँ। माँ कहाँ है, खाना खा लिया उसने ?"

- "हूँ। चलिए।"

अंदर डाइनिंग हॉल में पहुँच कर वेद दंग रह गया। पूरा टेबल खाना और गुलदस्तों से सज़ा था। किनारे पर पापा और माँ के विवाह वाली 'ब्लैक एंड व्हाइट' तस्वीर रखी हुई थी और बीच में कुछ कैंडल्स रखें हुए थे।

वेद की आँखें तर हो गईं । नम मुस्कुराहट के साथ वेद ने नैना को देखा । नैना खड़ी-खड़ी मुस्कुरा रही थी । वेद लपका और चूम लिए उसके नर्म हाथों को और अपनी हथेली में उसके चेहरे को भर कर सिर्फ, "जानाँ" ही बोला था कि दरवाजे पर आहट हुई। वो अलग हो कर खड़े हो गए। मम्मी जी आ गई थी।

- "अरे, तुमलोग अभी यहीं हो? गए नहीं ? देर हो जाएगी, जाओ।"

- "मम्मी जी, आज आपके साथ मनाएंगे हमलोग इस दिन को। आप की वजह से मुझे वेद जैसे पति मिले। आपने इन्हें प्रेम सिखाया है । आपने इन्हें सिखाया है कि कैसे इज़्ज़त की जाती है अपने साथी की। आज का दिन आपका है मम्मी जी। आइए, बैठिए यहाँ।" और स्वयं अंदर जा कर गाना बजा दिया। वापस आकर सासु माँ के बगल में बैठ गई । मम्मी जी की आँखों में ख़ुशी के आँसू थे। अंदर गाने की लाइन बज रही थी - "प्यारा पिया है, तुमने दिया है, ममता के आँचल में तुमने लिया है" ।

वेद माँ से नज़रें बचा कर नैना को देख लेता और हौले से बीच-बीच में उसके हाथों को छू भर लेता था । मारे शर्म के नैना गुलाबी साड़ी में और भी अधिक गुलाब-सी हुई जा रही थी।

दो वर्तमान का सत्य सरल, सुंदर भविष्य के सपने दो
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो

गोपाल सिंह नेपाली

मेरी पहली परीक्षा

सुनील कुमार
लेखापरीक्षक

बात है 20 अगस्त 2017 की जब मैं अपने छोटे शहर से अपने राज्य की राजधानी पटना में प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने के लिए पहुँचा ।

वहाँ मैंने एक लॉज में कमरा किराए पर लिया । मैं और मेरा एक दोस्त साथ रहने लगे और एक कोचिंग में हमलोग पढ़ने जाते थे जो मेरे लॉज से करीब-करीब 3 किलोमीटर दूर थी ।

2018 में रेलवे की वैकेंसी आई । हमलोगों ने फॉर्म भरा । उस समय मेरे पास एक साधारण सा फोन था जिससे सिर्फ बात होती थी । मैने पिताजी से कहा मुझे एक स्मार्टफोन लेना है । उन्होंने मुझे 10,000.00 रु, दिए । फिर मैं दोस्तों के साथ मोबाइल दुकान गया । वहाँ बहुत सारी फोन देखने के बात नोकिया-5 लिया जिसकी कीमत 11400 रु. थी फोन लेने के 10 दिन बाद ही मेरी परीक्षा की तिथि आ चुकी थी । मेरा सेन्टर सिलीगुड़ी में था । उस वक्त तक मैंने कभी ट्रेन में सफर नहीं किया था नही कहीं दूसरे शहर में अकेले गया था । मेरे सभी दोस्तों का सेंटर अलग अलग शहर में था । मुझे ट्रेन का रास्ता मालूम नहीं था । इसलिए पहले मैं पटना से बस में बैठकर पूर्णियाँ पहुँचा । चूँकि पूर्णियाँ से बहुत सारी बसें सिलीगुड़ी के लिए चलती हैं तो मैं पूर्णियाँ बस स्टैंड बहुँचा । वहाँ बहुत भीड़ थी । मैंने पूछा तो वहाँ अधिकांश लोग परीक्षा देने जानेवाले थे । किसी ने कहा रात वाली बस से जाएँगे सुबह पहुँचकर परीक्षा दे देंगे । किसी ने कहा अगर बस जाम में फँस गई तो परीक्षा छूट जाएगी। इसलिए दिन में ही चलते हैं । लेकिन दिन में कोई भी बस जानेवाली नहीं थी । फिर हमें 5 बजे एक बस मिली । बस रास्ते में दालकोला के पास जाम में फँस गई । उधर घर से भी बार-बार फोन आ रहा था कि पहुँच गया या नहीं । फिर 12.00 बजे रात में सिलीगुड़ी पहुँचा । जब वहाँ पहुँचा तो काफी वर्षा हो रही थी । मैं और कुछ लड़के जो बस में साथ आए थे आसपास किसी तरह लॉज ढूँढ़ने की कोशिश की । लेकिन उतनी रात में कहीं नहीं मिली । एक मिली तो वह एक से 500 रु. मांग कर रहा था । सबने बोला रात के 1 बज गए हैं तो क्यों हम 500 रु. दें । चलो बस स्टैंड में रुक जाते हैं । हमलोग बस स्टैंड पहुँचे । वहाँ बहुत सारे चोर घूम रहे थे । फिर हमलोग बारी-बारी से एक-एक जगने लगे । फिर सुबह हमने पब्लिक टॉयलेट में गए । वहाँ बहुत लम्बी कतार थी । हम भी कतार में लगे । फिर हमारी बारी आई । हमलोग फ्रेश हुए फिर अपनी सेंटर पर पहुँचे ।

हमलोग ई-रिक्शा में बैठे उसने 40-40 रु. लिए फिर हमलोग हमारा सेंटर जो कि शहर से 4 किमी दूर था, पहुँचे । वहाँ हमलोग समय से 1 घंटा पहले पहुँच गए । वहाँ पहुँचते ही वर्षा फिर होने लगी । आसपास में कुछ भी नहीं था जहाँ वर्षा से बचा जा सके । फिर हमलोग थोड़ा आगे बढ़े वहाँ जी

डी गोयनका स्कूल था । उसके पास में एक छोटी सी दुकान थी, वहाँ रुके । वर्षा समाप्त होते-होते 09.00 बज गए । फिर सेंटर में अंदर जाने का समय हुआ । वहाँ बैग रखने की कोई खास व्यवस्थित जगह नहीं थी । सबने एक जगह ही बैग का ढ़ेर लगा दिया । बैग में सबने अपना मोबाइल, पर्स तथा जो भी सामान परीक्षा में वर्जित था, सबने अपने बैग में डाले तथा अपने बैग को वहीं रख दिया । फिर हमलोग सुरक्षा जाँच लाइन में लगे । वहाँ सबको अच्छी तरह से चेक किया । तब हमें हमारा रूम नं. बताया गया । फिर हमलोग अपने-अपने रूम में चले गए । पूरे एक्जाम में मैं यही सोचता रहा कि अगर मेरा बैग नहीं मिला तो क्या होगा ? मैंने नई मोबाइल ली है, बार-बार यही ख्याल आ रहे थे । फिर परीक्षा खत्म होते ही सभी बैग की तरफ दौड़े और अपना-अपना बैग लिया । फिर हम सभी बस स्टैंड आए, पूर्णिया की बस ली और अपने घर चले आए । 4 महीने बाद रिजल्ट आया और हम पास हो गए थे ।

"समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

मुंबइया हिंदी

जय राम सिंह
क. अनुवादक

कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी ।
बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर छानी ।।

यह हिंदी की सुप्रसिद्ध कहावत है । हममें से अधिकांश लोग इसकी पहली पंक्ति ही जानते होंगे, दूसरी पंक्ति नहीं । हमारा जानना या न जानना हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति पर निर्भर करता है ।

जिस बिंदु पर हमारी आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाती हैं, हमारी जिज्ञासा की यात्रा भी उसी बिंदु पर समाप्त हो जाती है । बहरहाल, हम बात करने जा रहे हैं मुंबई में बोली जानेवाली हिंदी के स्वरूप की । मुंबई देश की आर्थिक राजधानी है । इसे मायानगरी भी कहते हैं । मान्यता है कि मुंबई महानगर कभी सोता नहीं । मुंबई में विशेषकर कामगारों या श्रमिकों की आवाजाही बहुत होती है । बेहतर जिंदगी की तलाश में दूसरी जगहों से लोग अपने संस्कार – संस्कृति, भाषा – बोली और ढर्रा लेकर इस मायानगरी में आते हैं । सबसे पहले कृषक और खेतिहर मजदूर कोंकण और उर्वरित महाराष्ट्र से यहाँ आए । फिर उत्तर प्रदेश – बिहार – राजस्थान, दक्षिण के आंध्र, कर्नाटक व तमिलनाडु से भी बड़ी संख्या में लोग मुंबई आए । पारसी व ईसाई पहले से ही थे । रोजगार – धंधे और मेल – मिलाप के सिलसिले में उनका सामना जब संवाद की दिक्कतों से पड़ा तो एक- दूसरे के संपर्क से एक अनोखी भाषा रचते चले गए । झटाक – फटाक जैसी भेलपुरी टपोरी भाषा पनपने लगी । कुछ लोग इसे 'मुंबइया हिंदी' भी कहते हैं । इसी तरह कोलकाता में कलकतिया हिंदी, चेन्नै में मद्रासी हिंदी और हैदराबाद में हैदराबादी हिंदी पनपी । सोशल मीडिया के ज़माने में हिंदी और अँग्रेजी का मिश्रित रूप 'हिंग्लिश' तो सारी दुनिया में बोली और समझी जा रही है और अब लिखी भी जाने लगी है ।

अगर आप मुंबई के हैं या कुछ महीने पहले से ही यहाँ रहना हुआ है तो शायद आपका परिचय 'वाट लग गई', 'खाली पीली बौम मत मार', 'कट ले', 'हिला डाला', 'ले डाला', 'धो डाला', 'वांदा हो गया', 'लंबी लंबी मत फेक', 'शेंडी मत लगा', 'लाइन मत मार', 'जास्ती फंडे मत मार', 'फुट ले/कट ले', 'पतली गली से सटक ले', 'चल, हवा आने दे', 'क्या उखाड़ लेगा?', 'काट डालेगा, समझा क्या?', 'वापर डाल', 'टाइम खोटा मत कर', 'येड़ा बनकर पेड़ा मत खिला', 'मामा बना दिया', 'परवड़ता नहीं है', 'लग गई', 'फट गई', 'मेमोरी आ रही है', 'याद गिर रही है', 'धार मार रहा है', 'हवा आन दे', 'खाली पीली मत बोल', 'कल्टी मार ले', 'कान के नीचे दूँगा', 'उँगली मत कर', 'ऑफ हो गया/टपक गया', 'बम्बू लग गई', 'बड़ी – बड़ी छोड़ मत', 'आज रोकडा कल उधार', 'पोल्सन मारने का', 'मस्के के माफिक चलता है', 'वन्टास की गोली ले', 'ऊपर से नीचे फुलटू पकाव आइटम है', 'आयला लयभारी आइटम है', 'दिमाग का दही करेला है' जैसे

वाक्यों से हो चुका होगा । 'अपुन', 'तेरेको', 'मेरेको', 'पकेला', 'थकेला', 'गएला', सटकेला', 'अटकेला', 'भटकेला', 'हटेला', 'पाटला', 'कायकू', 'इधरिच', 'उधरिच, 'वो इच तो', 'करेगाईच', 'पैचाना', 'बोले तो', 'बस क्या', 'भइया', 'बॉस', 'भिडू', 'बेवड़ा', 'येडा', 'पांडु', 'माम्', 'फेंकू', 'घंटा', 'टपोरी', 'आइटम', 'टकलू', 'घोंचू', 'लोचा', 'लफड़ा', 'चिपकू', 'छिनाल', 'डब्बा', 'ढक्कन', 'धाँसू', 'ढिंचेक', 'चिकना', 'शाला', 'पकाऊ', 'भाई लोग', 'बेवड़ा', 'चिरकुट', चिंदी', 'झंडु', 'छक्का', 'चिकना', 'माउसी', 'रापचिक', 'चिंकी', 'चालू', 'घंटा', 'झोल', 'सेटिंग', 'सुट्टा', 'मचमच', 'फंडा', 'खिटपिट', 'चपड़-गंजू', 'बोलबच्चन', 'खोपचा', 'गुलाटी', 'भनकस', 'झकास', 'चूरन', 'टपरी', 'खोपचा', 'फिरकी', 'चमाट', 'चिल्लमचिल्ली', 'चवन्नी छाप', 'कोपचा', 'बाटली', 'बंबू', 'लावडू', 'लफंदर', 'झक्कास', 'अड़ियल', 'छप्पन टिकली', 'मांडवली', 'टोपी', 'ठेकड़ी', 'छावी', 'पापाजी', 'बावा', 'बैटरी', 'बड़बड़', 'छप्पन टिकली', 'हड़काना', 'चरसी', 'भनकस', 'टल्ली', 'कालिया', 'फाडू', 'फट्टू', 'लट्टू', 'लोड', 'खोली', 'हॉफ टिकट', 'झोलक़', 'झोलर', 'हल पट्टी', 'कीड़ा', 'सुट्टा', 'चाय-पानी', 'कटिंग', 'कंट्री', 'देसी', 'कट – टु- कट', 'लफड़ा', 'सॉलिड', 'फटाकी', 'रागू', 'रागपट्टी', 'सामान', 'मैटेरियल', 'मरियल', 'मालगाड़ी', 'काली पीली', 'गटारी', 'गोली', 'नौटांक', 'सेठिया', 'सांड', 'नाका', 'नल्ला', 'पगार', 'पब्लिक लोग' जैसे शब्दों से भी पाला जरूर पड़ा होगा। इसके 'बिंदास' शब्द को तो ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी ने भी शामिल किया है।

देश भर की जुबान पर

संवाद की इस खिचड़ी बोली में मराठी, गुजराती और अँग्रेजी सहित सभी भाषाओं से उदारता से शब्द लिये गए हैं । तब से मुंबइया हिंदी में तकरीबन हर रोज नए शब्द गढ़े जा रहे हैं । इनमें कुछ तो आज देश भर की जुबान पर जा पहुंचे हैं । अगर कोई मुंबइया हिंदी के सबसे प्रचलित शब्दों को गिने तो शायद पांच सौ – हजार भी नहीं होंगे । पिछले कुछ वर्षों से – जब से टी. वी. सीरियल्स और ओटीटी का जोर बढ़ा है – खासकर अमिताभ बच्चन के संस्कृतनिष्ठ 'कौन बनेगा करोड़पति' से – मुंबई में हिंदी का सरल, पर परिमार्जित रूप भी बोला जाने लगा है। साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता मराठी लेखक स्व. जयंत पवार का कहना है कि 'भाषा महज, भावनाओं को वहन करने वाला माध्यम है । आम आदमी व्याकरण नहीं जानता, संप्रेषण जानता है । वह विचार से नहीं, भावना से एक- दूसरे के साथ जुड़ा हुआ होता है । इसी कारण वह बेहिचक भाषा को मरोड़ता है और अपनी चाल में बिठा देता है । इस लिहाज से मुंबइया हिंदी ही मुंबईवालों की लोकभाषा है' । जयंत ने मुंबइया हिंदी को लेकर अपनी रोज की लोकल ट्रेन यात्रा अनुभव सुनाया है - 'दो – चार गुजराती भाई आपस में गुजराती में ठहाके लगाते दिखाई देते हैं, एक – दो मराठीभाषी अपनी बोली में आपस में बोलते सुनाई देते हैं, दो कॉर्पोरेटवाले अँग्रेजी में बातें करते हैं। लेकिन बगैर परिचय वाले एक-दूसरे से हिंदी में ही बात करते हैं। हम सब की यात्रा की बोली हिंदी ही है।' इस मुंबइया संप्रेषण की व्याख्या करते हुए जयंत लिखते हैं, 'अगर मुंबई के रास्ते पर कोई किसी से कह रहा हो- 'ज्यादा शानपट्टी मत कर!', तो पास खड़े आदमी को (चाहे वह किसी भी भाषा का हो) ठीक से समझ में आ जाता है कि वह कौन सा संकेत दे रहा है। लिफ्ट में

मिला आदमी अगर कहे- 'मेरे कू चार माला जाना है।', तो कोई उसे नहीं कहेगा, 'चौथी मंजिल बोल'! 'मेरे कू आज ब्होत कंटाला आया' और 'आयला आपून की तो खटिया खड़ी हो गई।' ..... मतलब... शुद्ध न बोलने का कॉम्प्लेक्स किसी को भी नहीं है। इस तरह एक-दूसरी भाषाओं के शब्द अपने में समेट कर हिंदी बढ़ रही है - अँग्रेजी के प्रभाव को देसी ढंग से रोकते हुए।'

भेलपुरी भाषा

अपने व्यापक प्रभाव के बावजूद मुंबइया हिंदी मुख्यतः बोलचाल और स्टाइल मारने की भाषा ही बन कर रह गई है - अपेक्षाकृत कम पढ़े – लिखों की भाषा। इसे आम जुबान पर चढ़ाने का काम पहली बार हिंदी फिल्मों ने कोई 50 वर्ष पूर्व किया । संयोग से मुंबई में माफिया और मनमोहन देसाईनुमा फिल्मों के अभ्युदय का यही काल है। 'भाई लोगों' की जुबान पर उतरकर यह और खास हो गई है । इस हिंदी का न कोई लिखित रूप है और न ही ग्रामर । बोलने की शैली और लहजा भी हर भाषा – भाषी और प्रांतवासी का अलग है । अमिताभ बच्चन, शत्रुघ्न सिन्हा, जैकी श्राफ, आलिया भट्ट, शाहरुख खान, नाना पाटेकर, मनोज वाजपेयी, शहिद कपूर, कंगना रणौत, अजय देवगन, के के मेनन, इरफान खान और संजय दत्त जैसों की और 'अमर, अकबर, एंथोनी', 'सत्या', 'वास्तव', 'कंपनी', 'गंगूबाई', 'मकबूल', 'खलनायक', 'अब तक छप्पन', 'सरकार' और 'मुन्ना भाई ...' जैसी फिल्मों ने मुंबइया हिंदी की ब्रैंड वैल्यू बढ़ाकर 'भाई', 'भाईगीरी', 'सुपारी', 'हफ्ता', 'पेटी', 'खोखा', 'माल', 'पेटी', 'खोखा', 'पंटर', राडा, 'खल्लास', 'टपकाना', 'लुड़काना', 'गेम बजाना', 'सुल्टाना', 'घोड़ा', 'खर्चा-पानी', 'रागपट्टी' जैसे शब्दों को देश-विदेश तक पहुंचा दिया है । इसे हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित किया – मनोहर श्याम जोशी की 'कुरु कुरु स्वाहा', जगदंबा प्रसाद दीक्षित के 'मुरदाघर' और उदय शंकर भट्ट के 'सागर, लहरें और मनुष्य' ने । 'नवभारत टाइम्स' में यज्ञ शर्मा का 'खाली – पीली' और अवधेश व्यास 'दिमाग का दही' स्तंभ इसी बोली पर आधारित थे ।

मुंबइया हिंदी आज मुंबई की सबसे बड़ी पहचानों में एक है, पर यह स्वीकार्यता चिंताओं से विहीन नहीं है । हिंदी क्षेत्र के एक विद्वान ने बताया, 'अब भाषा को कपड़ों की तरह मिक्स एंड मैच करके बोलने का चलन बढ़ रहा है ।' अन्य भाषाओं के शब्द जब व्याकरणिक सीमाओं को तोड़ कर दूसरी भाषा में जबरन प्रवेश करने लगेंगे तब गलतियों का परिमाण बढ़ेगा और भाषाओं की वाक्य रचना को नुकसान पहुँचने लगेगा ।' बहरहाल, चिंता की कोई फौरी वजह दिखती नहीं । मुंबई में हिंदी भी बढ़ रही है और मराठी भी । 2011 की जनगणना के अनुसार देश के दूसरे प्रदेशों में बसे हिंदीभाषी प्रवासियों में उर्दू के बाद मराठी ही दूसरी सबसे लोकप्रिय भाषा है । महाराष्ट्र के करीब 60 लाख हिंदी भाषियों के लिए मराठी दूसरी भाषा है – 10 वर्ष पहले की तुलना में 21 लाख ज्यादा । मुंबई को लें, तो मराठी सबसे अधिक 44 लाख लोगों की मातृभाषा या पहली भाषा है। हिंदी दूसरे स्थान पर है – 35 लाख लोगों की । इसलिए उत्तेजक राजनीतिक बयानों को छोड़ दें तो मुंबई में भाषा कोई समस्या नहीं है ।

दरअसल, भाषाओं के सह-अस्तित्व के लिहाज से इससे बेहतर जगह और नहीं है । 'कटिंग चाय' (मतलब आधा कप) का गिलास हाथ में थामे आप यहाँ अपनी मातृभाषा के अलावा हिंदी-उर्दू, मराठी, गुजराती और अँग्रेजी एक साथ बोलते हैं – कई बार तो एक ही साँस में ।

अतः आप मुंबई में ही रहते हों या मुंबई घूमने आए हों, एक काम ज़रूर कीजिए – और वह काम है मुंबइया हिंदी का आनंद लीजिए ।

"हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है ।" - शंकरराव कप्पीकेरी

आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ

(आपके पत्र और उसमें व्यक्त अनमोल सुझाव हमारा मार्गदर्शन करते हैं। कृपया इस अंक के बारे में भी अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएँ।)

1317137/2023/CORD (CA-I) (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

अ. हि. प्रत्र./2023-24/96

प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

दिनांक - 26/10/2023

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
सातवी मंजील, आर. टी. आई. बिल्डिंग,
बांद्रा कुर्ला कॉम्पलेक्स, (पूर्व) मुंबई - 400051

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई - पत्रिका 'आँचल' का 19 वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,

हिन्दी अधिकारी

U:\Sandeep kumar\[illegible]

1255466/2023/CORD (CA-I) (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं
यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
Office of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB &
U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
फैक्स - 0172-2703110, दू. सं. - 2702272, 2702072

क्रमांक - हिंदी कक्ष/समीक्षा/10/2023-24/573 दिनांक- 10.11.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, नौवहन;सातवीं मंजिल,आई.टी.आई. बिल्डिंग,
प्लाट नं सी-2,बांद्रा कुर्ला, काम्प्लेक्स,बांद्रा(पूर्व) मुंबई-400051

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 19वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 19वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री रॉबर्ट सिम्टे की 'एक सामान्य दिन', सुश्री मंजरी सारस्वत की 'अभी मैं हूँ', श्री अभिनंदन अग्रवाल की 'जीवन-गाँव और शहर', श्री सुनील कुमार यादव की 'कहाँ आ गया', श्री दीपेन्द्र कुमार 'राज' की 'वाकिफ़ नहीं कोई', सुश्री चैताली 'थोड़ा ज्यादा', श्री जय राम सिंह 'हास्यमेव जयते' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

1383828/2023/CORD (CA-I) (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
O/O THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(CENTRAL),MUMBAI
C-25,AUDIT BHAVAN, BANDRA KURLA COMPLEX,
MUMBAI- 400 051
E-MAIL – PDACENTRALMUMBAI@CAG.GOV.IN

सत्यमेव जयते

सं.म.नि.ले.प./कें./रा.भा.अ./पत्रिका आँचल/2023-24/52 दिनांक: 27.11.2023

सेवा में

व.ले.प.अ./प्रशासन
महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन) का कार्यालय
7वाँ तल, आर.टी.आई.बिल्डिंग, प्लाट न. सी-2 जी.एन. ब्लॉक
एशियन हार्ट इंस्टिट्यूट के पीछे , बी.के.सी. बांद्रा (पूर्व), मुंबई -400051

विषय :- वार्षिक हिंदी पत्रिका **"आँचल" 19वें अंक** की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका **"आँचल" 19वें अंक** की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । इसके आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र अत्यंत मनोरम है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। निम्नलिखित रचनाकारों के रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं:-

क्र.सं	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री जयराम सिंह	हास्यमेव जयते
2.	श्री प्रवीण नाफाडे	धोबी का गधा
3.	श्री अमित कुमार सिन्हा	खिचड़ी की कहानी
4.	सुश्री नयना केलसकर	अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष
5.	श्री अभिनन्दन अग्रवाल	जीवन -गाँव और शहर
6.	सुश्री रितु मोटवानी	चिठियाँ

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

1

File No. [illegible]/2022-23 (Computer No. 18375)
Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 14/03/2024 11:43 AM

1619816/2024/ADMN (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
Office of The Director General of Commercial Audit, Mumbai
C-25, Audit Bhavan, 8th floor, Bandra – Kurla Complex, Mumbai – 400 051
Telephone: 022-69403800, Email: pdcamumbai@cag.gov.in

सं. डीजीसीए./प्रश./हिंदी पत्रिका/ 1050 दिनांक: 08/02/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई-400051

विषय: हिंदी पत्रिका "आँचल" के 19वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "आँचल" के 19वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका आवरण पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रुचिकर एवं ज्ञानप्रद तथा उच्च कोटि की है। श्री जयराम सिंह द्वारा रचित "हास्यमेव जयते", श्री अभिनंदन अग्रवाल द्वारा रचित "", "महिलाओं के विरुद्ध अपराध", "सपने सच होना" "वृद्धावस्था एवं सामाजिक सुरक्षा", "देश-प्रेम", "डॉ अब्दुल कलाम", "लघु कथाएं-गिद्ध और छोटी लड़की", "मुझे चांद चाहिए" विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएं भिन्न-भिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान करती है। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। पत्रिका प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

1099

भवदीया,

Signed by Vidya Muraleedharan
Date: 08-02-2024 11:42:49

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

1 1

File No. [illegible]/2023-23 (Computer No. 118271)
Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 14/02/2024 11:41 AM

1343383/2023/CORD (CA-I) (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

पत्र संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2023-24 | 198 | दिनांक: 02/11/2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई- 400051

संदर्भ:- डीजीए(नौ.)/प्रशा./विभागीयपत्रिका/2023-24 दिनांक- 10.10.2023

विषय: हिंदी पत्रिका "आँचल" के 19वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "आँचल" के 19वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री रॉबर्ट सिम्टे, लेखापरीक्षक का लेख "एक सामान्य दिन", सुश्री मंजरी सारस्वत, लेखापरीक्षक की कविता "अभी मैं हूँ" तथा श्री सुनील कुमार यादव, लेखापरीक्षक की कविता "कहाँ आ गया" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

03/11/2023

हिंदी अधिकारी

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail:agaeassam@cag.gov.in

File No. [illegible]/2022-23 (Computer No. [illegible])
Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 14/03/2024 11:44 AM

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit–II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ ९४ दिनांक:-18/10/2023

19 OCT 2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, नौवहन,
6वीं और 7वीं मंजिल, आरटीआई बिल्डिंग, प्लाट न. सी-2, जी एन ब्लॉक,
मुंबई - 400051

To,
Senior Audit Officer (Administration),
Office of the Principal Director of Audit (Shipping),
6th and 7th Floor, RTI Building, Plot No. C-2, GN Block,
Mumbai - 400051.

विषय: विभागीय पत्रिका "आँचल" के 19वें अंक का प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित कार्यालयी पत्रिका, 'आँचल' के 19वें अंक के ई-प्रति की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक तथा मनमोहक हैं। साथ-ही पत्रिका की रचनाओं में रचनात्मकता की झलक स्पस्ट रूप से दिखाई पड़ती है। कविता की श्रेणी में "वाकिफ कोई नहीं", "थोड़ा ज्यादा", "जीवन गाँव और शहर" एवं लेख में "जो लौट के घर न आए", "स्वतंत्रता सेनानियों की श्रद्धांजलि" इत्यादि भावविभोर कर देती हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

File No. [illegible]/2022-23 (Computer No. 18375)
Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 14/03/2024 11:45 AM

1612581/2024/ADMN (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर
JAMMU & KASHMIR, SRINAGAR

सत्यमेव जयते

क्रमांक: प्रम.(ले.व हक.)/हि.प्र./विभागीय राजभाषा पत्रिका/2022-23/ 251 | दिनांक: 15/ 12 /2023

02 FEB 2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन)
मुम्बई

विषय: विभागीय पत्रिका 'आँचल' के 19वें अंक का प्रेषण ।

संदर्भ: डीजीए(नौ.)/प्रशा/विभागीयपत्रिका/2023-24/I/412415/2023/. दिनांक 10/10/2023

महोदय/ महोदया

संदर्भित पत्र के साथ आपकी पत्रिका **'आँचल'** का नवीन अंक प्राप्त हुआ । आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें। विभागीय पत्रिकाएं अपने कार्यालय एवं अपने राज्य की संस्कृति और कार्यप्रणाली का उत्तम चित्रण करती हैं। इनके माध्यम से हमें कार्यालय एवं समाज में हो रही घटनाओं का सुंदर चित्रण प्राप्त होता है। आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं समान रूप से सरल, सहज, रोचक एवं ज्ञानवर्धक तो है ही इसके अतिरिक्त पत्रिका की साज सज्जा एवं मुद्रण भी अति उत्तम है, जिसके लिए लेखकों एवं संपादक मंडल के सदस्यों को विशेष बधाई ।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका **'आँचल'** के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

प्रवीन कुमार
14/12/23

सहायक लेखा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

एम. वाई. राथर एवेन्यू रोड, निकट प्रदर्शनी मैदान, श्रीनगर-190009/ M.Y.Rather Avenue Road, Near Exhibition Ground, Srinagar-190009

E-mail: agaejammukashmir@cag.gov.in

1

File No. [illegible]/2022-23 (Computer No. [illegible])
Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 14/02/2024 11:42 AM

महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय,तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KERALA, THIRUVANANTHAPURAM

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2023-24/018 2221/073 दिनांक 06.11.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षक (नौवहन),
मुंबई

महोदय/महोदया,

विषय : विभागीय हिंदी पत्रिका **'आँचल'** के 19वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ : आपके कार्यालय की ई-मेल दिनांक 17.10.2023.

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 19 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य की कामना के साथ, प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

File No. [illegible]/2022-23 (Computer No. 138375)
Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 14/03/2024 11:42 AM

चित्र बोलते हैं

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान राजभाषा में काम करने की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ अनुभाग पुरस्कार प्रदान करते महानिदेशक महोदय

आज फन दिवस है ! पिकनिक के दौरान जलक्रीड़ा में आनंदित कार्यालयकर्मी

श्रीमती विद्या जनार्दन नायक, पर्यवेक्षक की सेवानिवृत्ति का दृश्य

कार्यालय में आयोजित परंपरागत त्योहार 'हल्दी-कुंकुम' का दृश्य

ऑडिट दिवस 2023 के उपलक्ष्य में कार्यालय में आयोजित समारोह का दृश्य

श्री सतीश ताँबे, बहुकार्य कार्मिक को सेवानिवृत्ति पर शुभकामनाएँ देते महानिदेशक महोदय

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (08.03.2024) का दृश्य

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर केक काटकर उत्सव मनाती कार्यालय की महिला कर्मी

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित 'वार्षिक दिवस' समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेनेवाले प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाते निदेशक (प्रशासन) महोदय

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित 'वार्षिक दिवस' समारोह के सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपने शानदार प्रदर्शन से श्रोताओं का प्यार पानेवाले बाल-प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाते निदेशक (प्रशासन) महोदय

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित 'वार्षिक दिवस' समारोह के सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी एकल प्रस्तुति देते निदेशक (प्रशासन) महोदय

नियुक्तियाँ / पदोन्नतियाँ / स्थानांतरण / सेवानिवृत्ति
(01 जुलाई 2023 से 31 मार्च 2024 तक)

नियुक्तियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	सुश्री साक्षी शुक्ल	ले.प.	16.8.2023
2	श्री सुनील कुमार यादव	ले.प.	16.8.2023
3	श्री सौरभ नायक	ले.प.	25.8.2023
4	श्री हरिकेश	स.ले.प.अ.	21.11.2023
5	श्री भरत लाल मीणा	स.ले.प.अ.	28.11.2023
6	श्री विक्रम राज मीणा	स.ले.प.अ.	28.11.2023
7	श्री सचिन पन्नू	ले.प.	29.12.2023
8	श्री अजिंक्य साळवे	ले.प.	29.12.2023
9	श्री अनिल पूनिया	आशुलिपिक	29.12.2023
10	सुश्री कीर्ति राज	आशुलिपिक	01.01.2024
11	श्री सुधांशु रावत	ले.प.	04.01.2024
12	श्री पारितोष कुमार मल्ल	ले.प.	08.01.2024
13	श्री पम्पेश सिंह	ले.प.	10.01.2024
14	श्री अनूप सोळसकर	ले.प.	11.01.2024
15	सुश्री शिवानी वर्मा	आशुलिपिक	15.01.2024
16	श्री पियूष चौधरी	ले.प.	29.01.2024
17	श्री प्रभात कुमार	ले.प.	07.02.2024
18	श्री यश अग्रवाल	ले.प.	26.02.2024

पदोन्नतियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्रीमती प्रीति	ले.प.	24.8.2023
2	श्री ज्योतिमय बाइलुंग	निदेशक	01.01.2024
3	श्रीमती रोजी जॉय	पर्यवेक्षक	06.02.2024
4	श्री संतोष वनमाली	सहा. पर्यवेक्षक	08.03.2024

सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्रीमती वंदना दिवकर	सहा. पर्य.	28.09.2023
2	श्री कार्तिक निखलंकर	बहुकार्य कार्मिक	31.10.2023
3	श्रीमती विद्या नायक	पर्यवेक्षक	05.02.2024
4	श्री सतीश ताँबे	बहुकार्यिक कार्मिक	29.02.2024

"आँचल" परिवार नवनियुक्त और योगदान करनेवाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करता है एवं आपके सफल एवं सुखद करियर की कामना करता है । **"आँचल"** परिवार सभी पदोन्नत हुए कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता है एवं भविष्य में ऐसे कई पदोन्नतियों की कामना करता है। **"आँचल"** परिवार सभी सेवानिवृत्त कार्मिकों को उनके सेवानिवृत्त जीवन में अच्छे स्वास्थ्य एवं खुशहाली के लिए शुभकामनाएँ देता है ।

सामाजिक जागरूकता
सक्षम वित्तीय प्रशासन
संसदीय पटल
पारदर्शिता
राज्य वित्त
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आँचल